ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 27 | दिसम्बर -2025 | अंक - 12 | माउंट आबू | Rs.- 20

ब्रह्मा बाबा के जीवन का जीवंत संदेश तीन शब्दों में...

प्रजापिता ब्रह्माबाबा के जीवन से प्रेरित आध्यात्मिक पुरुषार्थ के तीन स्तम्भ निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। उन्होंने इन तीनों अवस्थाओं को सूक्ष्म रूप से सिर्फ समझा ही नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन का अंग भी बनाया और यूं कहें कि वैसा ही जीया। ये तीन सिर्फ शब्द ही नहीं, बल्कि जीवन को दिव्यता की ओर ले जाने वाला अहम् पुरुषार्थ है। आइये समझते हैं इन तीनों को विस्तार से...

निराकारी स्थिति-आत्मा की मूल पहचान का अनुभव

निराकारी स्थिति का अर्थ है- देह-चेतना (देहभान) से मुक्त होकर आत्मा की स्मृति में स्थित रहना। प्रजापिता ब्रह्माबाबा ने अपने जीवन द्वारा सिखाया कि जब मनुष्य "मैं शरीर नहीं, एक ज्योति बिन्दु आत्मा हूँ" इस स्मृति में स्थित होता है, तो मन, वाणी और कर्म में सहज शान्ति और स्थिरता आ जाती है। पुरुषार्थी जीवन में यह स्थिति सबसे आधारभूत है, क्योंकि इससे मन के विचार शान्त होते हैं और आत्मा परमात्मा से जुड़ पाती है। निराकारी बनने के लिए नियमित अमृतवेला योग, मौन का अभ्यास एवं दिनभर में "मैं आत्मा हूँ" की स्मृति को पुनः जागृत करना आवश्यक है। बीच-बीच में यह अभ्यास करते रहना है। जब यह स्थिति पक्की होती है तो व्यक्ति परिस्थितियों में भी शान्त और समाधान युक्त होता है- यही सच्ची योगयुक्त स्थिति है।

निर्विकारी स्थिति- आत्मा की पवित्रता और श्रेष्ठ दृष्टिकोण

निर्विकारी स्थिति का सम्बन्ध हमारी दृष्टि, वृत्ति और व्यवहार से है। जब मनुष्य विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार) से ऊपर उठता है, तब आत्मा की मौलिक व वास्तविक पवित्रता प्रकट होती है। ब्रह्माबाबा का जीवन इस स्थिति का श्रेष्ठ उदाहरण है- उन्होंने जीवन के प्रत्येक सम्बन्ध को आत्मिक दृष्टि से देखा, सभी के प्रति आत्मिक भाव और शुभ भाव रखा। पुरुषार्थी जीवन में निर्विकारी स्थिति बनाए रखने के लिए संग की मर्यादा, विचारों की स्वच्छता और दृष्टि में आत्मिकता रखना आवश्यक है। निर्विकारिता का अर्थ केवल ब्रह्मचर्य नहीं, बल्कि विचार, शब्द और कर्म तीनों में पवित्रता है। इससे आत्मा की शक्ति और दिव्यता बढ़ती है। जब दृष्टि विकारी नहीं होती तब संसार भी सुंदर प्रतीत होता है- क्योंकि दृष्टिकोण ही हमारी दुनिया को बनाता है।

निरहंकारी स्थिति- सच्ची ईश्वरीय सेवा की पहचान

निरहंकारी स्थिति पुरुषोत्तम बनाने की सबसे ऊंची अवस्था है। ब्रह्माबाबा ने सिखाया कि "मैं कुछ नहीं, सबकुछ शिवबाबा है।" यही निरहंकारी भावना ईश्वरीय यज्ञ की सफलता का मूल कारण बनी। पुरुषार्थी जीवन में जब हम सेवा करते हैं तो अहंकार का सूक्ष्म रूप- जैसे "मैंने किया, मेरे बिना नहीं हो सकता"- धीरे-धीरे आ जाता है। अतः सावधानी यही है कि सदा स्वयं को साधन और शिवबाबा को कर्ता समझें।

निरहंकारी रहने के लिए कृतज्ञता, नम्रता और स्वीकार्यता की भावना रखनी चाहिए। किसी भी सफलता पर "यह शिवबाबा की कृपा है" यह भाव रखें। जब आत्मा इस विनम्रता में रहती है तब ही परमात्मा की शक्ति सहज रूप से उसमें कार्य करती है। यही स्थिति व्यक्ति को पुरुषोत्तम अर्थात् श्रेष्ठ कर्मयोगी बनाती है। निराकारी आत्मा की स्मृति, निर्विकारी दृष्टि की पवित्रता और निरहंकारी सेवा को संयोजन ही ब्रह्माबाबा का सम्पूर्ण जीवन का संदेश है। तीनों अवस्थाओं का अभ्यास करते हुए मनुष्य अपनी चेतना को देह-चेतना से देव-चेतना में परिवर्तित कर सकता है। यही वह मार्ग है जिसे आत्मा, परमात्मा समान बनती है व जीवन सच्चे अर्थों में "स्वर्ग समान" अनुभव होता है।

माननीय प्रधानमंत्री ने ब्रह्माकुमारीज़ नवा रायपुर में "शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड" का किया उद्घाटन

आने वाले समय में ब्रह्माकुमारीज़ विश्व शान्ति के प्रयासों का प्रमुख केन्द्र होगा- माननीय प्रधानमंत्री

नवा रायपुर-छ.ग.। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के नवा रायपुर में नवनिर्मित "शान्ति शिखर एकडेमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर" को समाज के नाम समर्पित किया। इस दौरान पी.एम. मोदी ने मेडिटेशन रूम में कुछ समय ध्यान भी लगाया तत्पश्चात् ओमशान्ति के सम्बोधन के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आपने स्वयं को ही नहीं विश्व और ब्रह्मांड में शान्ति के प्रयासों से जोड़ा है। आपका पहला सम्बोधन ही ओमशान्ति है। ओम् अर्थात् ब्रह्म और सम्पूर्ण

ब्रह्मांड। शान्ति अर्थात् शान्ति ही कामना है। इसलिए ब्रह्माकुमारीज़ के विचारों का हर किसी के अंतर्मन पर इतना प्रभाव पड़ता है। विश्व शान्ति की अवधारणा भारत के मौलिक विचारों का हिस्सा है। मैंने हमेशा अनुभव किया है, ब्रह्माकुमारीज़ में शब्द कम, सेवा ज़्यादा है। मैं शान्ति शिखर की संकल्पना में उनके (दादी जानकी) विचारों को साकार होते हुए देख रहा हूँ। राज्य के विकास से देश का विकास, इसी मंत्र पर चलते हुए हम भारत को विकसित बनाने के अभियान में जुटे है। विकसित भारत की इस अहम यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्था की अहम भूमिका है। मैंने इस आध्यात्मिक आंदोलन को वटवृक्ष की तरह विशाल होते देखा है।

यहाँ शब्द कम, सेवा ज़्यादा है-

पीएम मोदी ने कहा कि हमारे यहाँ कहा जाता है आचार्य परमोधर्मः, आचार्य परमोतपं, आचार्य परमज्ञानमं, आचार्य किं साध्यते अर्थात् आचरण ही सबसे बड़ा धर्म है, आचरण ही सबसे बड़ा तप है और आचरण ही सबसे बड़ा ज्ञान है। आचरण से क्या कुछ सिद्ध नहीं हो सकता है। बदलाव तब होता है, जब अपनी कथनी को करनी में उतारा जाए और यही ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत है। जहाँ हर बहनें पहले कठोर तप और साधना में खुद को तपाती है। समाज को सशक्त करने में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाओं की अहम भूमिका है।

मोदी ने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अनुभव किए साझा-

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मेरा तो सौभाग्य रहा है कि मैं बीते कई दशकों से आप सबके साथ जुड़ा हुआ हूँ। मैं यहाँ अतिथि नहीं हूँ,मैं आपका ही हूँ। इस संस्थान से मेरा अपनापन है। खासकर राजयोगिनी ब्र.कु. जानकी दादी का स्नेह, राजयोगिनी ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी का मार्गदर्शन यह मेरी जीवन की विशेष स्मृतियों का हिस्सा है। मैं बहुत भाग्यवान रहा हूँ। वर्ष 2022 में अहमदाबाद में फ्यूचर ऑफ पॉवर कार्यक्रम हो, वर्ष 2012 में संस्थान की स्थापना के 75 वर्ष हो या 2013 में प्रयागराज के कार्यक्रम हो, आबू जाना हो या गुजरात में किसी कार्यक्रम में जाना हो यह तो बहुत रुटीन सा हो गया था। दिल्ली आने के बाद आज़ादी के अमृत महोत्सव से जुड़ा अभियान हो, स्वच्छ भारत अभियान या जल-जन अभियान इन सबसे जुड़ने का मौका हो मैं जब भी आपके बीच आया हूँ, आपके प्रयासों को बहुत गंभीरता से देखा है।

दुनिया के हर देश में ब्रह्माकुमारीज़ के लोग मिले

मोदी ने कहा कि प्रधानमंत्री बनने क बाद दुनिया

-शेष पेज 3 पर...

नया साल 2026- विश्व शान्ति और सुख-समृद्धि की शुभकामनाएँ

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

नए साल का आगमन केवल कैलेन्डर का बदलना नहीं, बल्कि चेतना का नवजीवन है। हर आत्मा के भीतर यह गहरी कामना होती है कि "मैं और मेरा संसार सुखी हो, सबके जीवन में शान्ति, प्रेम और समृद्धि का प्रवाह हो।" यही सच्ची आध्यात्मिक शुभकामना है- "सर्वे भवन्तु सुखिनः।"

1. सबके लिए शुभभावना का संकल्प

नए साल की पहली घड़ी में यह संकल्प रखें- "मेरे प्रत्येक विचार से सब आत्माएँ सुख, शान्ति और शक्ति का अनुभव करें।" जब हमारा मन शुभभावना से भरा होता है तो वह वातावरण में सकारात्मक तरंगें फैलाता है। परमात्मा कहते हैं- "विचार ही वायब्रेशन हैं और वायब्रेशन ही सृष्टि को बदलते हैं।" यदि हर आत्मा यह संकल्प ले कि मैं किसी के लिए बुरा नहीं सोचूँगा, तो धरती पर दुःख, द्वेष और दुःख के बादल अपने आप छँट जाएंगे।

2. स्वयं सुखी बनकर दूसरों को सुख देना

सुख बाँटने से घटता नहीं, बढ़ता है। परन्तु देने के लिए पहले स्वयं को भरना पड़ता है। इसलिए आत्मा को रोज़ परमात्मा से शक्ति और सुख का स्टॉक लेना चाहिए। जब आत्मा परमात्मा की याद में रहती है तो वह भीतर से इतनी भरपूर होती है कि उसकी दृष्टि, वाणी और कर्म से ही सुख की किरणें झलकती हैं। ऐसी आत्मा जहाँ भी जाती है, वहाँ शान्ति का वातावरण बन जाता है।

3. विश्व शान्ति का वास्तविक मार्ग

विश्व शान्ति के लिए कोई राजनीतिक संधि या भौतिक साधन पर्याप्त नहीं, क्योंकि यह युद्ध बाहर नहीं, पहले मन में होता है। इसलिए मन की शान्ति ही विश्व शान्ति की नींव है। राजयोग ध्यान के माध्यम से जब आत्मा अपने मूल स्वरूप- "शान्ति में स्थित होती है तो वही शक्ति विश्व को शान्त बनाती है।" हर आत्मा यदि प्रतिदिन पाँच मिनट "वर्ल्ड पीस मेडिटेशन" करे, तो वातावरण में अद्भुत परिवर्तन संभव है।

4. सभी के जीवन में समृद्धि और संतुलन

समृद्धि का अर्थ केवल धन नहीं, बल्कि संतुलन और संतोष है। जो आत्मा अपने विचारों, समय और संबंधों में संतुलन रखती है, वही सच्ची समृद्धि है। इस नये साल में यह संकल्प लें- "मैं जो भी प्राप्त करूँ, उसे ईश्वर का दान मानकर कृतज्ञ हूँ।" कृतज्ञता ही समृद्धि का द्वार खोलती है।

5. विश्व के प्रति शुभदृष्टि और दुआएं सबसे सुंदर उपहार

जब हम किसी को दुआ देते हैं, तो वह दुआ पहले हमें ही आशीर्वाद देती है। इसलिए इस नए साल 2026 में हर आत्मा के लिए शुभकामना करें- "सभी आत्माएँ स्वस्थ, सुखी, शान्तिपूर्ण और समृद्ध रहें।" यह एक ऐसा संकल्प है जो आत्मा को हल्का, पवित्र और प्रसन्न बना देता है।

नया साल केवल खुशियों का त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा के नव-जागरण का पर्व है। इस वर्ष हम सब मिलकर यह दिव्य संदेश फैलाएँ- "सब सुखी रहें, सब निरोग रहें, सबका जीवन शान्ति और समृद्धि से भरा रहे।" जब हर आत्मा शुभ भावना से भरेगी, तब सचमुच धरती पर स्वर्ग का आरंभ होगा। यही है 2026 का सच्चा आध्यात्मिक उपहार- सुख, शान्ति और समृद्धि से भरा विश्व।

संगमयुग पर बाबा ने अनेकानेक झूले दिए हैं, उन्हीं झूलों में सदा झूलते रहो तो मनोरंजन का अनुभव होता रहेगा

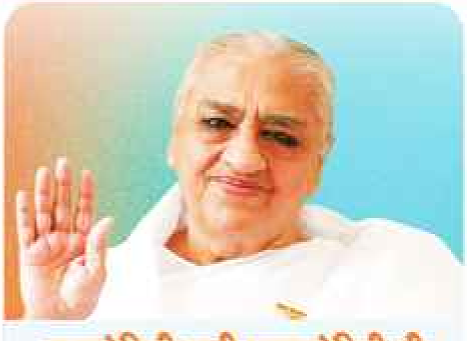
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम एक-एक से बाबा का प्यार कितना है! और उस प्यार ने सहज अपना बना दिया। मेरा बाबा जो है ही मेरा तो उस मेरे को याद करना बहुत सहज होता है। सारा दिन देखो मेरा ही याद आता है, तो हमारा पहले कौन? मेरा बाबा। दिल से कहो मेरा बाबा, वाह बाबा वाह! और बाबा का गीत है 'मेरे मीठे बच्चे, वाह मेरे बच्चे!' तो बाबा से जितना ही प्यार है उतना ही बाबा का प्यार तो अविनाशी सदाकाल का है ही। लेकिन अभी बाबा इशारे क्या दे रहा है, वर्तमान समय बाबा के यही इशारे हैं कि बस, बाबा समान बन जाएं। हर एक मेरा बच्चा कर्मेन्द्रियों को जीतने वाले, मन-बुद्धि-संस्कार को जीतने वाले विजयी बच्चे बन जाएं। बाबा कहते हैं आपकी बुद्धि में रहे- विजय जन्म सिद्ध अधिकार है। यह नशा रहना चाहिए। होगी या नहीं होगी, पुरुषार्थ तो कर रहे हैं, हो जाएगी करके बाबा को दिलासा देते, अपने को धोखे में नहीं रखना चाहिए। बाबा कहते हैं एवररेडी समझो अभी-अभी विनाश हो जाए तो सब विजयी हो जाएं, युद्ध नहीं करनी पड़े, युद्ध करने में तो लवलीन स्थिति की अवस्था का अनुभव नहीं होगा। बाबा कहता है बस, सदा लवलीन रहो यानी लव में लीन रहो। बच्चे कहते हैं बाबा सारा दिन क्या करें? बाबा ने कहा, मैंने तुमको इतने झूले बनाके दिए हैं, कभी ज्ञान के झूले में झूलो, कभी प्रेम के झूले में झूलो, कभी शक्तियों के झूले में झूलो।

एक झूले से दूसरे, दूसरे से तीसरे झूले में जाओ। सदा झूले में झूलते रहो, बाबा से प्राप्त खज़ानों से खेलो, वतन में आओ या बाबा से रूहरिहान करो, इतने काम हैं इसी में बिज़ी रहो तो मोहब्बत में मेहनत नहीं लगेगी, मनोरंजन में रहेंगे। यही हम एक-एक बच्चों के प्रति बाबा की आशाएं हैं। तो ऐसे बाबा की आशाओं को पूर्ण करने वाले सभी आशाओं के तारे हैं या उम्मीदों के सितारे हैं? जब बाबा हमारे साथ हैं तो सब सहज हो ही जाएगा। और इस आश को पूर्ण करने से ही सब खुश रहके खुशी बांटों तो खुशी बढ़ती रहेगी।

यज्ञ बाबा का, कार्य बाबा का, करन-करावनहार बाबा तो हम चिन्ता क्यों करें...!

कई लोग मेरे से यह सवाल पूछते हैं कि दादी आपको कोई फिक्र होता है? क्योंकि जानते तो हैं कि आखिर इतने बड़े कार्य-व्यवहार की कई बातें होती हैं। रोज़ की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं। कई बार तो एक में दूसरी, दूसरी में तीसरी बात आती तो फिकर तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फिकर होता, न कोई चिन्ता

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

होती, न कोई चिन्तन चलता- इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फिकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मेरी कोई रचना है क्या जो मैं फिकर करूँ! तेरी रचना है तू उनका फिकर करो, मुझे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं हाँ जी। आप करावनहार हैं, जो भी कराएं हम सदा तैयार हैं।

हम सबका एक ही मंत्र है- जी हुज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हुज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! अधिक से अधिक बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेंगे 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिए दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं गुफा में रहते हैं, एक-एक मास पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आएगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे।

समर्पित वह है जो कदम-कदम श्रीमत के फरमान पर चलता है। यही हमारा धर्म है, मार्यादा है, श्रीमत ही आज्ञा है। तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ- इसका चार्ट नोट करो। श्रीमत कहती है रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज रखो। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा का परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। अब बाबा ने हम सबको यही अन्तिम श्रीमत दी है कि बच्चे तुम्हारे जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए याद की यात्रा में रहो। एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमज़ोरियों को खत्म करेगा। हम समर्पित

आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, रॉन्ग हुआ तो भी जवाबदार हो। तो फिकरात किसकी? कोई बात है प्लैन करो, राय करो- कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है। हम कभी चिन्ता करते नहीं। आप लोगों ने कभी देखा है? फिकर से फारिग कींदा स्वामी सद्गुरु। तो फिकर वह करे, हम क्यों करें!

आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फिकर नहीं होगा। जो खिलावे वो खाना है, जो पहनावे वो पहनना है, अगर उसे बच्चों के मुख से सदैव रत्न निकालने चाहिए, कभी कुवचन नहीं निकलें। क्रोधमुक्त होकर रहो। दृष्टि, वृत्ति सदा पावन रहे तो हर चलन से, बोल से बापदादा का नाम बाला कर सकेंगे।

समर्पित माना एक बाबा ही मेरा संसार है। बाकी न कोई मेरा, न कोई मेरी...। मेरे दिल में भी तू है, नयनों में भी तू है, सिर पर भी तू है... बांहों में भी तू है... तेरे सिवाए मेरा कोई नहीं। तुम्हीं से सुनूं, तुम्हीं से बोलूं, तुम्ही से हर संबंध निभाऊं...। ऐसा नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप रहने वाला ही अन्त समय के सेकण्ड के पेपर में पास विद ऑनर बन सकेगा।

जीते-जी मरना माना देह-भान रिंचक मात्र भी न रहे

हर बाबा का बच्चा ड्रामा में अपना यादगार खुद बनाता है। जैसे कर्म करता है, जैसे सम्बन्ध रखता है। कर्म-सम्बन्ध का कनेक्शन है, उसमें जितना दिव्यता, अलौकिकता है वैसा यादगार बनता है। बाबा ने सच्चा और पक्का ब्राह्मण बनाया है। सच्चा ब्राह्मण सच्ची दिल से बाबा को राज़ी करेगा। बाबा जिसमें राज़ी फिर क्या करेगा काज़ी, यानी धर्मराज कुछ नहीं कर सकता। थोड़ा भी मिक्सचर होगा तो हाफ कास्ट ब्राह्मण हो जाएगा। यह टाइटल कौन-सा हो गया! अधूरा ब्राह्मण कैसा होगा! उसको इतनी खाने की परहेज नहीं होगी, सवेरे अमृतवेला ठीक नहीं होगा, क्लास में बहाना देगा। सच्चा ब्राह्मण मजाल है जो बहाना देवे!

पहले जब बाबा दृष्टि देता था तो अन्दर कम्पन्न होता था, समझते थे शरीर छोड़ रहे हैं। अभी यह नहीं कहते हैं, पर शरीर से न्यारे, अशरीरी हो रहे हैं। जैसे बाबा अशरीरी है, सर्व आत्माओं में एक परमात्मा ही अशरीरी है। परमपिता है, धर्म पिताओं का पिता है, वो दृष्टि देता है तो आँख खुल जाती है। आँख खुली तो बुद्धि भी बदल गई। बुद्धि है अन्दर, मन-बुद्धि-संस्कार। आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं। समझते थे कि आत्मा शरीर धारण करती है पर मुझारा था कि आत्मा निर्लेप है, आत्मा ही परमात्मा है। अभी बाबा ने कितनी गहरी बात समझाई है कि आत्मा कर्म शरीर द्वारा करती है। शरीर आत्मा के बगैर कोई कर्म नहीं कर सकता है। उसमें कर्म और सम्बन्ध का कितना हिसाब-किताब है, यह बाबा ने आकर बुद्धि दी। दृष्टि देकर ध्यान खिंचवाया अपनी तरफ, कौन आया परदेशी। तो जिसका ध्यान दिव्य दृष्टिदाता की तरफ चला गया, वो जीते जी मर गया। वो जीता है पर मरे के बराबर। दुनिया वाले भी समझते हैं ये तो जैसे मरे के बराबर है। अन्दर देह से न्यारा, स्वभाव-संस्कार से भी न्यारा हो गया। बाबा की दृष्टि से शान्तिधाम का भी अनुभव हो जाता है। खुद शान्ति का सागर है, आत्मा को इशारा करता है तुम भी वहाँ की रहने वाली हो। मेरी संतान हो, यहाँ तुम मेरे से बिछुड़ी हो, रावण के चम्बे में आ गई हो। मैं उससे छुड़ाने आया हूँ। कितनी जीवन बदल गई है, कहाँ दुनिया, कहाँ हम रात-दिन का अन्तर हो गया।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ज़माना बहुत खराब है, बचो और बचाओ। जो बचता है वो औरों को भी बचा सकता है। सच्चे बनकर रहो। सच्चे बच्चे की बुद्धि पॉवरफुल होगी माना योग अच्छा होगा। वाणी में कम बोलेंगे और कर्म से दिखाई पड़ेगा। कर्म का कनेक्शन बुद्धि के साथ है। बाबा ने हमारी बुद्धि चेन्ज कर दी है। कभी क्षत्रिय की बुद्धि हो तो साक्षी होकर देखो। शुद्र बुद्धि वाला तो बाबा के घर में आएगा ही नहीं। अभी मन को अच्छा खाना मिलता है। पहले मन बिचारा भूखा था, शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। अभी अच्छा खाना मिला तो शान्ति तो आ गई, फिर चिन्ता काहे की करें! तो अपनी बुद्धि पर बर्डन न रखो, न किसी पर आपका बर्डन हो। हमारे ऊपर केवल अपने को सुधारने की ज़िम्मेवारी है। दुनिया भले पीछे माने, पर हमें बाबा की बात पहले माननी है। जिससे मेरी जीवन बदल जाए, बस और कोई इच्छा नहीं है। बदलने शुरू होती है तो निश्चय अपने में और बाबा में बैठ जाता है। निश्चय रखा, संकल्प रखा तो बाबा मदद करता है। मदद मिलने से शक्ति आ जाती है। खुशी आ गई, सिर हल्का हो गया। तो कभी यह ख्याल न आए कि क्या करूँ, कैसे करूँ, यह क्षत्रिय के ख्याल हैं। यह कर, ऐसे कर वो बन गया ब्राह्मण। फिर करता है तो ऐसे नहीं लगता कि मैं करता हूँ, पर बाबा मदद करता है।

पुरानी दुनिया में रहते हो तो अपने को बचाके रखो, जो उसका असर आपके ऊपर न हो जाए, जो दुःख सहना पड़े। अपने को बिल्कुल डिटैच रखो। अटैचमेंट को समझना, डिटैच रहकर कितना सुखी रहते यह समझना। कुदरत का नियम है यह पांच अंगुली बराबर नहीं हैं। पर आदत ऐसी हो गई है जो नैचुरल को छोड़ अननैचुरल बन गए हैं। कॉं-कॉं करके सिर खपाने वाली बात करेंगे। अरे अब अच्छा करते हैं ना। मन को धीरज सिखाना, यह हाथ हमको सिखाता है, हाथ में हाथ मिलाकर चलो।

जो प्राचीन भारत की सभ्यता है, इंसान जाति है, परमात्मा के बच्चे हैं, सभ्यता और नम्रता ने यहाँ तक पहुंचाया है। नम्रता जब तक व्यवहार में नहीं आई है, ब्राह्मण से फरिश्ता कैसे बनेंगे! बाबा की शक्ल हमको हमारा फ्यूचर दिखाती है। खुली आँख से बाबा को देखो तो बाबा हमारा फ्यूचर है। तुम अपने को देख चेंज करो।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के "शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड रिट्रीट" सेंटर के भवन का फीता काटकर विधिवत उद्घाटन करते हुए भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी। साथ हैं छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल रमेन डेका व माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एवं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय।

मंचासीन हैं भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल रमेन डेका व माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी एवं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रिमोट से भवन का लोकार्पण करते हुए। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल रमेन डेका व माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एवं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी की आकर्षक रंगोली देखते हुए माननीय प्रधानमंत्री।

नवनिर्मित "शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर" के सभागार में बैठे हुए ब्र.कु. भाई-बहनें तथा अन्य।

छत्तीसगढ़ एवं आस-पास के क्षेत्रों के लिए यह ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का "शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर" अपने आप में सबसे अनोखा और आध्यात्मिक आकर्षक का केन्द्र

– भवन में होंगी ये सारी सुविधाएं–

1. 105 फीट ऊंची, 150 फीट चौड़ी और 225 फीट लंबी है यह इमारत।
2. 2000 लोगों की क्षमता का एलईडी स्क्रीनयुक्त एसी ऑडिटोरियम।
3. 400 लोगों की क्षमता के दो सेमिनार हॉल।
4. 100 लोगों को एक साथ राजयोग ध्यान करने के लिए विशाल मेडिटेशन हॉल।
5. 25 लोग लाइब्रेरी में एक साथ बैठकर संस्था की आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा देने वाली किताबें पढ़ सकेंगे।
6. 100 अतिथियों को ठहरने के लिए उत्तम सुविधायुक्त कमरे।
7. 300 से अधिक लोग एक साथ डायनिंग हॉल में कर सकेंगे भोजन।
8. 200 से अधिक लोग वीडियो थिएटर में संस्था द्वारा तैयार की गई आध्यात्मिक फिल्में देख सकेंगे।
9. दो एकड़ ज़मीन पर बना ये भवन देखने में राजस्थानी शैली के महल का एहसास देता है। यह पाँच मंजिला भवन जो उत्तम सुविधाओं से लेस है।
10. समाज के प्रत्येक वर्ग जैसे युवा, मेडिकल, मीडिया, प्रशासक, सामाजिक, शिक्षा, राजनीतिज्ञ, खेल आदि वर्गों की उन्नति के लिए कार्यशालाएं, कॉन्फ्रेंस आदि के कार्यक्रम निरन्तर चलेंगे।
11. 2018 से 11 हजार सदस्यों ने रोज दिया न्यूनतम एक रुपये, इसी से तैयार हुआ राजस्थानी शैली में शान्ति शिखर।

आने वाले समय में ब्रह्माकुमारीज़ विश्व शान्ति...

पेज 1 का शेष...

में मैं जहाँ-जहाँ गया, एक भी देश ऐसा नहीं होगा जहाँ एयरपोर्ट हो या कार्यक्रम का स्थान हो मुझे ब्रह्माकुमारीज़ के लोग नहीं मिले हों, उनकी शुभकामनाएं मेरे साथ न रही हों। इसमें मुझे अपनेपन का एहसास भी होता है और आपकी शक्ति का भी अंदाजा लगता है। जिन सपनों को लेकर आप चले हैं वह सपने नहीं हैं, वह संकल्प होते हैं। आपके संकल्प पूरे हों।

यह ऊर्जा लोगों को शान्ति प्रयासों से जोड़ेगी

पीएम मोदी ने कहा कि आज हमारा छत्तीसगढ़ अपनी स्थापना के 25 साल पूरे कर रहा है। छत्तीसगढ़ के साथ झारखंड और उत्तराखंड की स्थापना के भी 25 वर्ष पूरे हुए हैं। देश के और भी कई राज्य अपना स्थापना दिवस मना रहे हैं। मुझे विश्वास है शान्ति शिखर जैसे संस्थान भारत के प्रयासों को नई ऊर्जा देंगे। इस संस्थान से निकली ऊर्जा देश-दुनिया के लाखों लोगों को विश्व शान्ति के इस विचार से जोड़ेगी।

अध्यात्म दिखाता है शान्ति की राह

पीएम मोदी ने अध्यात्म पर कहा कि आत्म संयम से आत्म ज्ञान, आत्म ज्ञान से आत्म साक्षात्कार और आत्म साक्षात्कार से आत्म शान्ति, इसी पथ पर चलते हुए शान्ति शिखर एकेडमी में साधक वैश्विक शान्ति का माध्यम बनेंगे। ग्लोबल पीस के मिशन में जितनी अहमियत विचारों की होती है, उतनी ही बड़ी भूमिका व्यावहारिक नीतियों और प्रयासों की भी होती है। भारत उस दिशा में आज अपनी भूमिका पूरी ईमानदारी के साथ निभाने का प्रयास कर रहा है। पूरी दुनिया में कहीं भी संकट आता है, कोई आपदा आती है तो भारत एक भरोसेमंद साथी के तौर पर मदद के लिए आगे आता है, तुरंत पहुंचता है। भारत फर्स्ट रेस्पॉन्डर होता है। विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भाव हो ऐसी उदार सोच के साथ हमारे यहाँ हर धार्मिक अनुष्ठान होता है। विश्व कल्याण की भावना का आस्था से सहज संगम हमारी सभ्यता, संस्कृति का सहज स्वभाव है। ये भारत की आध्यात्मिक चेतना का प्रकट रूप है।

प्रकृति के साथ मिलकर जीना सीखना होगा

पीएम मोदी ने पर्यावरण संरक्षण का आह्वान करते हुए कहा कि आज पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियों के बीच भारत पूरे विश्व में प्रकृति संरक्षण की प्रमुख आवाज़ बना हुआ है। बहुत आवश्यक है कि प्रकृति ने हमें जो दिया है हम उसका संरक्षण और संवर्धन करें। यह तभी होगा जब हम प्रकृति के साथ मिलकर जीना सीखेंगे। भारत अभी से भविष्य के प्रति अपनी इन ज़िम्मेदारियों को न केवल समझ रहा है, बल्कि उन्हें निभा भी रहा है। वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रीड जैसे भारत के इनीशिएटिव वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर का भारत के विज़न के साथ आज दुनिया जुड़ रही है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ परिवार की ओर से प्रधानमंत्री का हार्दिक अभिनंदन है। परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे ताकि आपके भारत के विश्व गुरु बनाने के संकल्प को सकारात्मक ऊर्जा मिलती रहे और आपके नेतृत्व में देश आगे बढ़ता रहे।

कुछ प्रमुख झलकियां...

- प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से मेरा अपनापन है, ब्रह्माकुमारीज़ में शब्द कम, सेवा ज़्यादा है।
- "ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड" समाज की सेवा में समर्पित
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया नवनिर्मित भवन का लोकार्पण, पी.एम. ने मेडिटेशन रूम में लगाया ध्यान
- माननीय प्रधानमंत्री ने अपने सम्बोधन में अध्यात्म, विश्व शान्ति, पर्यावरण संरक्षण, संस्कृति और ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अपने अनुभवों को किया साझा।
- छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका, माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, अतिरिक्त महासचिव डॉ. राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य संस्थान के पदाधिकारी भी रहे मौजूद।
- ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने छत्तीसगढ़ी टोपी और माला पहनाकर प्रधानमंत्री का स्वागत किया।
- अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने माननीय प्रधानमंत्री को शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया।
- परिसर में पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. दादी जानकी और प्रधानमंत्री मोदी की आकर्षक रंगोली भी सजाई गई।
- पूरे परिसर को आकर्षक लाइटिंग से सजाया गया।

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग द्वारा संस्थान के मुख्यालय में आयोजित राष्ट्रीय मीडिया कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र के दौरान ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी को ग्लोबल स्पिरिचुअल लीडरशिप अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े व इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर इंग्लैंड के उपाध्यक्ष डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज योग भवन,घाटकोपर,मुंबई सबज़ोन द्वारा आयोजित चैतन्य दिव्य झाँकी में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विष्णुप्रिया, लोकसभा सांसद व क्षेत्रीय कांग्रेस कमेटी,मुंबई की अध्यक्षा वर्षा गायकवाड़, राज्यसभा सांसद व भारत के विशेष लोक अभियोजक एडवोकेट उज्जवल निकम, लोकसभा सांसद अनिल देसाई, नगरसेविका आशा ताई मराठे,बी.एम.सी., अभिनेत्री शशि शर्मा, उत्तर महाराष्ट्र शिवसेना के समन्वयक रविन्द्र निर्लेकर, महाराष्ट्र कामगार कल्याण मंडळ के सहायक श्रमिक कल्याण आयुक्त नितिन पाटिल, प्रसिद्ध ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. दीप वोरा तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

वडोदरा-मांजलपुर(गुज.)। बालाजी एजेंसी बिल्डिंग मैटेरियल्स सप्लायर का लीडिंग ब्रांड के उद्घाटन समारोह में ब्र.कु. धीरज बहन, भाजपा अध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश सोनी, एक्सपोर्ट मेंबर खादी इंडिया के ललित कुमार शाह,भाजपा, पूर्व मेयर और म्युनिसिपल काउंसलर वडोदरा वार्ड नंबर17 निलेश सी राठौर, एम.एस. यूनिवर्सिटी के डीन सत्यजीत जी, बालाजी एजेंसी के मालिक धवल सी इटालिया तथा अन्य की उपस्थिति रही।

येवला-महा.। दशहरे के अवसर पर श्रीमद् देवी भागवत कथा में ब्र.कु. नीता और ब्र.कु. अनु को नवदुर्गा पुरस्कार से सम्मानित करते हुए जगदम्बा देवस्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष रावसाहेब कोटमे तथा उपाध्यक्ष भाऊसाहेब आदमाने। साथ हैं अन्य अतिथिगण।

पुणे पिंपरी-महा.। नवरात्रि के अवसर पर चैतन्य नवदुर्गा झाँकी के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा, अध्यक्ष जवाहर कोटवानी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें। झाँकी में 501 महिला भक्तों द्वारा सामूहिक आरती हुई।

स्वयं परमात्मा शिव ने विश्व परिवर्तन का कार्य ब्रह्मा बाबा को सौंपा...

राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

कोई भी श्रेष्ठ परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करने के लिए मुख्यतः हिम्मत, साहस और अनुभव की आवश्यकता होती है। परमात्मा ने देखा कि इस समय संसार की हालत बिल्कुल ही जड़-जड़ीभूत हो गई है ऐसे में नयी सतयुगी दुनिया बनाने के लिए योग्य व्यक्ति को चुना। जिनमें ये सारी योग्यताएं एवं कलाएं थीं। जिनका नाम रखा प्रजापिता ब्रह्मा। परमात्मा का सिलेक्शन तो सर्वश्रेष्ठ ही होगा ना!

संसार में समय-समय पर ऐसे अनेक महात्माएं होकर गए हैं जिनके त्याग, तपस्या, और प्रभु मिलन की लगन की कहानियों से सारा जग वाकिफ है। अब सभी के मन में एक प्रश्न आता है कि परमात्मा ने ब्रह्माबाबा को ही क्यों चुना? और इसी तरह ये भी समय है कि जब इस समय में भी कोई न कोई महान आत्मा का जन्म होना ही चाहिए। क्योंकि वैसे अगर देखा जाए तो भगवान किसी का भी तन चुनते, इस संसार में किसी का भी तन चुनते तो प्रश्न तो उठना ही था कि भगवान ने इसी व्यक्ति का तन क्यों चुना? लेकिन हम सभी जानते हैं कि चाहे जीजस क्राइस्ट आये, महात्मा बुद्ध आये, ऐसी कई महान आत्माएं आये जिनके द्वारा परमात्मा ने समय प्रति समय कोई न कोई दिव्य कार्य कराया। तब उनके लिए तो ये प्रश्न नहीं उठा?

इस समय में परमात्म को मालूम है उसको कहा ही जाता है जानी-जाननहार, सबकुछ जानते हैं। तो हर व्यक्ति की मनोस्थिति को, उसकी आत्मा की प्युरिटी को वो जानता है। और इस संसार में कौन ऐसी पात्र आत्मा है जो परमात्म कार्य करने के लिए उत्तम हो, उसे पता है। इसलिए ये तो आज ऐसा हो गया दुनिया के अन्दर कि जैसे मनुष्य हर चीज़ को मॉनिटर करना चाहता है तो परमात्मा के कार्य के लिए भी जैसे मॉनिटर करना चाहता है। वास्तव में भगवान को पता है कि उसको किस तन की आवश्यकता है और किस तरह से इस संसार में अधर्म का विनाश और सत् धर्म की पुनः स्थापना करानी है। और उसके लिए पिताश्री जी का तन उचित इसीलिए समझा उन्होंने क्योंकि गृहस्थ धर्म में थे। दूसरा एक बिज़नेसमैन थे, जौहरी थे। हीरे जवाहरात का बिज़नेस करते थे। तो बिज़नेस के कारण भी उनको अनुभव ज़्यादा था। गृहस्थ धर्म में होने के कारण गृहस्थ जीवन की क्या प्रॉब्लम्स होती हैं उसका भी अनुभव था। तो ये सारा अनुभव होने के कारण वो शायद संसार को अच्छी दिशा दे सकते थे, अपने अनुभव के माध्यम से।

दूसरा कि एक जौहरी के पास अथाह धन था। वैसे परमात्मा ने अनेक गुरुओं के माध्यम से भी कार्य कराया। कई लोगों ने अपने-अपने तन-मन से पूरी समर्पण भावना के साथ, त्याग-तपस्या के साथ कार्य किया। लेकिन ये जो कार्य था कि जब उस समय माताएं-बहनें जैसे मर्यादा में रहती थीं, उन्हें जैसे घर से बाहर जाने की इजाजत नहीं होती थी। ऐसे समय पर परमात्मा ने इस संसार में अवतरण किया। और उस समय परमात्मा ने यही एक विशेष कार्य, या ज्ञान का कलष माताओं-बहनों के सिर पर रखा। यही एक संकल्पना थी ब्रह्मा बाबा की भी कि अगर माताएं-बहनें आगे आयेंगी तो शायद समाज का उद्धार हो सकता है। क्यों? क्योंकि एक माँ के अन्दर ही संस्कार देने की कला होती है, जो और किसी के अन्दर नहीं होती। और इसीलिए परमात्मा ने भी यही समझा कि ब्रह्मा बाबा की भी एक विज़न थी कि ये आध्यात्मिक संस्कार देने का कार्य भी जितना सकुशल माताएं-बहनें कर सकेंगी उतना शायद कोई न कर सकेगा। इसीलिए उन्होंने माताओं-बहनों को आगे किया। और वन्दे-मातरम कहकर ये ज्ञान का कलष दिया समाज के अन्दर। अनेकों को ये आध्यात्मिक संस्कार सींचने का कार्य सौंपा। साथ ही साथ उस समय क्योंकि पिताश्री ब्रह्मा बाबा के माध्यम से परमात्मा ने एक नया मंत्र दिया कि सत् धर्म की स्थापना करने के लिए एक प्युरिफिकेशन बहुत ज़रूरी है। तो पवित्र बनने का एक मंत्र दिया कि योगी बनो और पवित्र बनो।

राजकोट-गुज.। ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा हैप्पी विलेज रिट्रीट सेंटर में आयोजित 'राजऋषि गोकुल गांव' सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में गुजरात जोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, ब्र.कु. अंजु, ब्र.कु. किंजल, ग्राम विकास प्रभाग के ब्र.कु. चन्द्रेश,माउंट आबू, जिला पंचायत प्रमुख प्रवीणाबेन रंगाणी, राष्ट्रीय कामधेनु आयोग के पूर्व चेयरमैन डॉ. वल्लभ कथिरिया, आर.के. यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर डेनिश पटेल, सरपंच श्याम प्रताप राठौड़,जाहोता,राज., रिलायंस फाउंडेशन की लिसाबेन, हॉर्टिकल्चर के डायरेक्टर डॉ. हिरेन भीमाणी, गिरगंगा ट्रस्ट के प्रमुख दिलीप सखिया तथा अन्य।

चरोदा-छ.ग.। शिक्षक दिवस के अवसर पर हेमचंद यादव विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. संजय तिवारी,दुर्ग को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवानी।

पन्ना-म.प्र.। नवनियुक्त एसपी श्रीमती निवेदिता नायडू को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता।

अंबिकापुर-चोपड़ा पारा(छ.ग.)। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज नव विश्व भवन में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. विद्या बहन, भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पार्षद आलोक दुबे, भाजपा नेता करता राम गुप्ता, पूर्व पार्षद रमेश जायसवाल, व्यवसायी शैलेन्द्र गर्ग, प्रेमलता गुप्ता, माधुरी दुबे तथा अन्य।

ग्वालियर-इंद्र गंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के मीडिया, यूथ एवं आईटी प्रभाग द्वारा एडीआईआरए(एआई और डिजिटल समावेशन के लचीलापन पर आधारित क्रिया) पहल के अंतर्गत डेटा लीड्स के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर आयोजित एक दिवसीय एआई प्रशिक्षण कार्यशाला में सभा को सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, मीडिया विंग एवं यूथ विंग ग्वालियर संयोजक ब्र.कु. प्रहलाद, महेश कुमार,एडिटर एनआरटी,दैनिक भास्कर, डॉ. मनीष कुमार जैसल,विभागाध्यक्ष,पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,आईटीएम विश्वविद्यालय। कार्यक्रम में रामदेई माता व अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

अगर कोई सफाई नहीं रखता और आप बहुत सफाई पसंद हैं तो आप कहेंगे कि ये सफाई ही नहीं रखते हैं लेकिन कई लोग ऐसे हो सकते हैं, जो आपसे भी ज़्यादा सफाई रखते हों। जो मेरे से कम हैं, वो भी मुझे अच्छा नहीं लगता और जो मेरे से ज़्यादा हैं, वो भी नहीं। इसका मतलब हम जो भीतर से हैं यानी कि हमारा जैसा संस्कार है वैसा ही हम दूसरों से चाहते।

जैसे हमारे संस्कार होते, वैसे ही हमारी दूसरों से अपेक्षाएं रहती

ब्र.कु. शिवानी बहन,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

बचपन से ही हमारा सोचने का एक तरीका बन जाता है। जैसे कि अपेक्षाएं करना सही है। जबकि जैसे ही ये समझ में आएगा कि हम आत्मा हैं, हमने अनेक जन्म लिए हैं, हमारे संस्कार अलग-अलग हैं, तो फिर एक्सपेक्टेशंस यानी अपेक्षाएं नहीं, बल्कि एक्सेप्टेंस यानी स्वीकार्यता हमारे लिए स्वाभाविक हो जाएगी।

जो संस्कार मेरे मन पर रिकॉर्डेड होगा, वो ही मुझे सही लगेगा। जैसे किसी सभागार में इकट्ठे होने का समय सुबह 9:00 बजे का है। तब समय के पाबंद होने की सबकी परिभाषाएं अलग-अलग होंगी। जैसे ईमानदारी की परिभाषा लोगों के लिए अलग-अलग होती है। संजीदगी की अलग, साफ-सफाई की अलग, कार्यदक्षता की अलग। अगर कोई सफाई नहीं रखता और आप बहुत सफाईपसंद हैं तो आप कहेंगे कि ये सफाई ही नहीं रखते हैं। लेकिन कई लोग ऐसे हो सकते हैं, जो आपसे भी ज़्यादा सफाई रखते हों। जो मेरे से कम हैं, वो भी मुझे अच्छा नहीं लगता और जो मेरे से ज्यादा हैं, वो भी नहीं। तो सबको कैसे होना चाहिए? बिल्कुल मेरे जैसा होना चाहिए? कोई झूठ बोलता है तो आप कहते हैं बिल्कुल अच्छा नहीं है, झूठ बहुत बोलता है। कोई सच्चा मिल जाए तो कहेंगे ज़रूरत से ज़्यादा सच्चा है, इतना भी सच्चा किसी को नहीं होना चाहिए।

संस्कार यानी शब्द वो ही हैं लेकिन उसकी परिभाषाएं अलग-अलग हैं। अलग होने पर हमने ये नहीं कहा कि उनका संस्कार मुझसे अलग है। हमने कहना शुरू कर दिया कि आप गलत हैं कि आप लेट आए आप गलत हैं, आपने झूठ बोला आप गलत हैं, आपने ऐसा किया आप गलत हैं। अब देखना कि जैसे ही यहां से वाइब्स भेजी कि आप गलत हैं तो आपने डिसरिस्पेक्ट या अपमान की एनर्जी भेजी। मैंने एक थॉट क्रिएट किया कि जो मुझसे अलग है, वो गलत है। तो मुझे बहुत लोग गलत दिखने लगते हैं और कई बार तो पूरी दुनिया ही गलत दिखाई देने लग जाती है।

गलत शब्द डिसरिस्पेक्ट क्रिएट करता है। रिश्तों की बुनियाद परस्पर-सम्मान में ही हो सकती है। डिसरिस्पेक्ट अगर बार-बार बीच में आती गई तो रिश्ता बहुत ही कमज़ोर नींव पर टिका है। आज एक शब्द को बदलते हैं कि उनका संस्कार मेरे से अलग है। दो लोगों के संस्कार बिल्कुल अलग होकर भी अगर बुनियाद में सम्मान है तो रिश्ता मजबूत होगा। अगर दोनों में से एक भी संस्कार अलग होने पर बुनियाद में अपमान डाल दिया तो रिश्ता कमज़ोर।

दिन में बच्चों के लिए कितनी बार हम कह देते हैं वो गलत हैं। और बच्चे कह देते हैं आप गलत। फिर उसको हम कहते हैं- जनरेशन गैप। हर पीढ़ी ने अपनी पीढ़ी से यही कहा है आप गलत हैं। अगले ने भी कह दिया कि आप गलत। हमने कहा कि हम आपको नहीं समझ सकते तो उन्होंने भी कहा हम भी आपको नहीं समझ सकते। दुनिया ने कहा कोई बात नहीं, ये सबके साथ होता है- जनरेशन गैप। आज से सिर्फ एक शब्द को चेंज करना- उनके संस्कार हमसे अलग हैं। लेकिन वो संस्कार इस समय उनके लिए सही हैं। पूरी दुनिया भी कहे कि वो संस्कार गलत हैं लेकिन जिसका वो संस्कार होता है उसको वो ही ठीक लगता है। जब तक उसको खुद को नहीं लगेगा, वो अपने संस्कार को चेंज करने वाले नहीं हैं।

रीवा-म.प्र.। भोपाल,मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को आत्म निर्भर भारत एवं स्वदेशी अभियान में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सहयोग का संकल्प पत्र भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. लीला तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

मुंबई-मुलुंड वेस्ट(महा.)। ब्रह्माकुमारीज मुलुंड सबजोन के सालगिरह निमित्त सम्मान समारोह में राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. लाजवंती दीदी, श्री नानजी खीमजी ठाक्कर ठाणेवाला, समाजसेवी अशोक जग्यासी, आर.आर. एजुकेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी डॉ. राजेन्द्र सिंह, अमित सिंह, ईशावती सिंह तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें व गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही। नवरात्रि के अवसर पर तीनों वरिष्ठ दीदियों को चुन्नी ओढ़ाकर, आरती उतारकर व अन्य पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार सम्मानित किया गया।

नवसारी-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में आंमत्रित नवसारी जिला सीनियर सिटीजन ट्रस्ट के प्रमुख सुरेश देसाई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता बहन। मंचासीन हैं अन्य अतिथिगण।

साउथ ऑस्ट्रेलिया-एडिलेड। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज ऑस्ट्रेलिया व गिल्स प्लेन्स नेपाली सेवा टीम द्वारा संयुक्त रूप से एडिलेड के वुडविल टाउन हॉल में आयोजित दशैं तिहार कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. समांथा व्हाइट, ब्र.कु. सीता, साउथ ऑस्ट्रेलिया के विपक्ष दल के उपनेता जोश टीग एमपी, विधान परिषद् की सदस्य जिंग ली, नेपाल के मानद काउंसल दीपक धमला तथा अन्य सामुदायिक नेता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में चैतन्य नौ देवियों की भी झाँकी सजाई गई।

मॉस्को-रूस। 'अफानसी निकितिन का नागरिक आदेश' कार्यक्रम में पुरस्कार वितरण के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज मॉस्को की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी, मॉस्को स्थित भारतीय दूतावास मिशन के उपप्रमुख व कार्यक्रम के अध्यक्ष निखिलेश गिरि, स्टेट लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी की रेक्टर इरीना अर्कादेवना क्रेवा, अंतर्राष्ट्रीय मानवीय सहयोग केन्द्र के पूर्व कार्यकारी रोज़ोव्स्की फ्योदोर अलेक्सेविच, पर्म स्टेट मेडिकल यूनिवर्सिटी के रेक्टर प्रो. ब्लागोनरावोवा अन्ना सर्गेवना, ओम्स्क स्टेट मेडिकल यूनिवर्सिटी के रेक्टर मिरोशनिचेंको इगोर वासिलीविच, एनआरआई क्लब के सचिव कुर्बातोव दिमित्री, भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र 'सीता' की निदेशक दशा कोटवानी, पत्रकार विनय शुक्ला, हिन्दुस्तानी समाज के अध्यक्ष कश्मीर सिंह, कटार सिंह तथा अन्य गणमान्य व्यक्तिगण।

रूस-सेंट पीटर्सबर्ग। सेंट पीटर्सबर्ग महिला गठबंधन द्वारा आयोजित गोलमेज सम्मेलन 'रूस में लोगों की कूटनीति के 100 वर्ष : शांति के लिए सहयोग' पश्चात् समूह चित्र में सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. डॉ. श्याम व ब्र.कु. विभूति,माउंट आबू तथा अन्य सेंट पीटर्सबर्ग के ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

नीमच-जीरन(म.प्र.)। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान के नवनिर्मित भवन 'शिव धाम' के भव्य हॉल में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी तपस्वी बहनों को सम्मानित व कुमारी दीपिका पंवार को अष्टभुजाधारी महादुर्गा के स्वरूप में श्रृंगारित कर नवरात्रि पर्व मनाया गया। समूह चित्र में साथ उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी व राजयोगी ब्र.कु. सुरेन्द्र।

मॉस्को-रूस। 'अफानसी निकितिन का नागरिक आदेश' कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज मॉस्को की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी को 'सिविलियन ऑर्डर ऑफ अफानसी निकितिन' द्वारा सम्मानित करते हुए आदेश अखिल रूसी सार्वजनिक संगठन डेलोवाया रोसिया की सुश्री एकातेरिना वलेरिएव्ना अवदीवा।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। नवरात्रि के शुभ अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी के शुभारम्भ व ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर कारवा किशन जी माहेश्वरी, सह नगर कारवा शैलेन्द्र जी सोलंकी, नगर सह शारीरिक प्रमुख सुमित कोचले, अंबेडकर उपनगर कारवा के धर्मेन्द्र सिंह, नगर परिषद उपाध्यक्ष पूजा योगी,नामली, श्रीनाथ योगी, डॉ. दिलीप नलगे तथा अन्य।

FOR ONLINE TRANSFER
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 600, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

स्वास्थ्य

घर बैठे जानें- लीवर, किडनी और फेफड़े को डिटॉक्स करने की विधि

इस दुनिया में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसके पास अपना वाहन ना हो। चाहे उसके पास साइकिल हो, स्कूटर हो, स्कूटी हो, मोटरसाइकिल हो, कार हो, जीप हो, कोई ना कोई वाहन ज़रूर होगा। और उस वाहन की हर आदमी समय-समय पर सर्विस करवाता रहता है और सर्विस के साथ-साथ उसको दमका कर, चमका कर साथ में रखता है। उसमें ज़रा सा भी कहीं कोई नुक्स आता है, दिक्कत आती है तो वह मैकेनिक के पास जाकर उसको ठीक कराने की कोशिश करता है। लेकिन भगवान ने हमको बहुत खूबसूरत और दुर्लभ शरीर दिया है। हम उसकी बिल्कुल परवाह नहीं करते और छोटी-मोटी दिक्कतों में हम बेपरवाह हो जाते हैं। लेकिन आज हम आपको हमारी बॉडी के चार ऑर्गन्स मुख्य हैं उनको डिटॉक्स करने के लिए बहुत सुन्दर और अच्छे प्रयोग आपको बताएंगे और ऐसे प्रयोग बताएंगे जो आप स्वयं कर लेंगे और आपको बहुत लाभ मिलेगा।

हमारे तीन ऑर्गन्स मुख्यतः लीवर, किडनी और फेफड़े, इन ऑर्गन्स की यदि एक्टिविटी बहुत अच्छी है तो हम बीमार नहीं होते। हमारी बॉडी के सारे फंक्शन एक्टिवेट रहते हैं। हम एनर्जेटिक रहते हैं।

लिवर - आज सबसे पहले बात करते हैं लीवर की। अट्रम-सट्रम ये जंक फूड खा के, बहुत ज़्यादा एंटीबायोटिक्स पेन किलर खाने के बाद, बहुत ज़्यादा भूख मारने के बाद, बहुत ज़्यादा गलत भोजन करने के कारण अक्सर हमारा लीवर फैटी हो जाता है। आज के समय में 70 प्रतिशत से अधिक लोग लीवर फैटी से ग्रसित हैं। लीवर फैटी यानी कि लीवर में फैट होता है। 5 प्रतिशत तक और 5 प्रतिशत से ज़्यादा फैट हो तो उसको कहते हैं लीवर फैटी और बहुत ज़्यादा लीवर के अंदर गंदगी जमा हो जाती है। एक छोटा-सा प्रयोग जिसको आप अपने घर में करें तो आप देखेंगे कि आपको एक दिन के अंदर ही लाभ मिलने लगता है।

प्रयोग- 20ग्राम काली किशमिश लेनी है। उनको एक गिलास पानी में रात को भिगो के रख लेना है। प्रातःकाल आप इस किशमिश को चबा-चबाकर खूब खा लें। इतना चबाएं कि बिल्कुल लेस बन जाए और उसके बाद उसके पानी को पी लें। यह प्रयोग यदि आप सिर्फ 15 दिन कर लेंगे तो आपका लीवर डिटॉक्स होने लगेगा और आपको भूख खुलकर लगने लगेगी। आपकी पाचन क्रिया आप देखेंगे कि बहुत मजबूत होने लगेगी।

किडनी- अक्सर लोग पानी बहुत कम पीते हैं या बहुत ज़्यादा डिब्बा बंद पेय पदार्थ लेने के कारण किडनी फंक्शन डिसएक्टिवेट होते हैं। उनका बीपी बढ़ने लगता है। बहुत ज़्यादा नमक, मिर्च, मसाले, जंक फूड के कारण ब्लड यूरिया, क्रिएटिनाइन, यूरिक एसिड इत्यादि बढ़ने लगते हैं और किडनी के फंक्शन प्रॉपर नहीं होते। पेशाब खुल के नहीं आता। आप इस प्रयोग को करके देखेंगे तो एक महीने के अंदर ही आपकी किडनी के फंक्शन एक्टिवेट होंगे। आपको बहुत लाभ मिलने लगेगा।

प्रयोग- एक मुट्ठी जौ एक गिलास पानी में खूब उबाल लें और उस पानी को खाली पेट पी लें तो आप देखेंगे कि पेशाब बहुत खुल के आता है। किडनी के फंक्शन बहुत अच्छे एक्टिवेट होते हैं और आपको छोटी-मोटी किडनी संबंधित बीमारी हो, प्रोटीन ज़्यादा हो, युरिया क्रिएटिन बढ़ रहे हों तो उसमें आपको बहुत लाभ मिलने लगेगा। इसे हफ्ते में एक-दो बार अवश्य करें। इससे जल्द ही आपको लाभ मिलेगा।

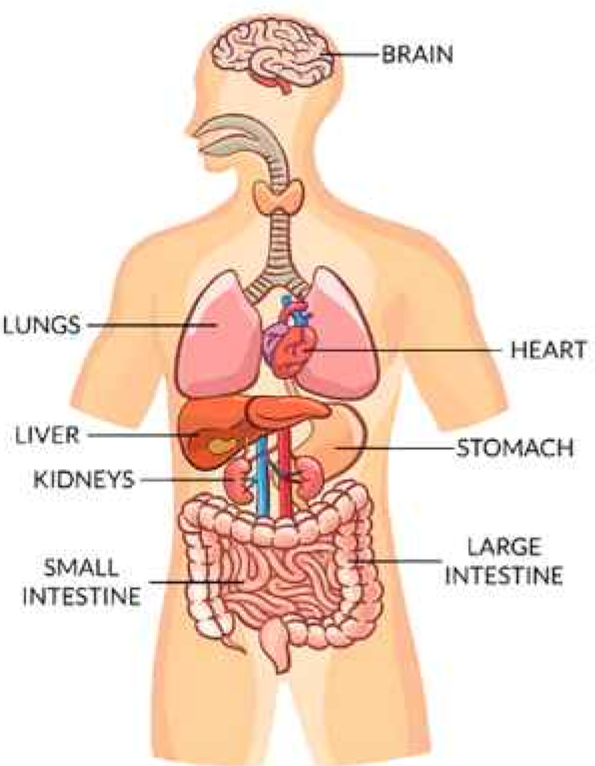

हम देखते हैं कि भुट्टे लोग बहुत पसंद करते हैं, जिसके पॉपकॉर्न भी बनते हैं। भुट्टे के यदि आप छिलके उतारेंगे तो अंदर से बाल निकलते हैं। जिन लोगों के शरीर में सूजन आ रही हो, किडनी काम ना कर रही हो, किडनी फंक्शन डिसएक्टिवेट हो, ऐसे लोग यदि मुट्ठी भर भुट्टे के बाल एक हफ्ते पानी में खूब पका लें और उसको सेवन करें तो पेशाब तो खुल के आता ही है, सूजन दूर होती है और साथ ही साथ किडनी के फंक्शन बहुत अच्छे एक्टिवेट होते हैं।

फेफड़े- जो हमारी बॉडी में ऑक्सीजन लेता है और कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ता है। इसके कारण बहुत से लोग स्मोक करते हैं, तंबाकू खाते हैं, गंदी हवा में पॉल्यूशन में रहते हैं तो हमारे फेफड़े वीक होने लगते हैं। काम करते हुए भी हमारी सांस फूलने लगती है

प्रयोग- ऐसे लोग दो चम्मच शहद, एक चम्मच नींबू का रस, एक चम्मच अदरक का रस। इन तीनों को मिला लें। प्रातः काल खाली पेट ले-लें। 20दिन यदि आप इस प्रयोग को कर लेंगे तो आप देखेंगे कि आपके फेफड़ों की एफिशिएंसी बढ़ने लगती है। किसी को अस्थमें की प्रॉब्लम हो या फेफड़ों की कमज़ोरी हो, ब्रोंकाइटिस हो, बलगम बहुत बनता हो, उसमें उनको बहुत लाभ मिलता है।

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज अटलादरा के 22वें वार्षिकोत्सव पर युवाओं के लिए आयोजित 'हैप्पीनेस कैफे' सेमिनार में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा, सह संचालिका ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. डॉ. राजेश अरोड़ा,माउंट आबू, योगाचार्य ब्र.कु. हरीश, जनरल सर्जन डॉ. हेमंत पंचाल, सीए चेतन शाह, वीएमसी हेल्थ डिपार्टमेंट से बायोलॉजिस्ट धारा बेन उनाडकट, इंडस्ट्रियलिस्ट शांति भाई कवा, एबल एज फाउंडेशन के ट्रस्टी रिकेश देसाई, कॉर्पोरेटर बंदिश शाह, कोषाध्यक्ष गोपाल रबारी, जमुना बाई हॉस्पिटल के सीडीएमओ जिज्ञा बेन नायक, सनफार्मा कंपनी के मैनेजर विनय जायसवाल तथा अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

नरसिंहपुर-म.प्र.। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी में सर्व ब्राह्मण महिला एकता परिषद की जिला अध्यक्षा श्रीमती विवेक पांडे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम। मौके पर उपस्थित रहे परिषद की कार्यकारिणी सदस्य नगर अध्यक्ष सुनंदा भट्ट, संरक्षक श्रीमती सरला पांडे, जिला उपाध्यक्ष श्रीमती अरुणा दुबे, संयोजक श्रीमती शालिनी दुबे, जिला सचिव ज्योति तिवारी, जिला नगर कोषाध्यक्ष श्रीमती नंदिता चौबे तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।

केशोद-गुज.। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. गीता, नगरपालिका प्रमुख मेहुलभाई गोंडलिया, धारासभ्य देवाभाई मालम, पूर्व धारासभ्य अरविंदभाई लाड़ानी, गौरांगभाई व्यास, अग्रणी उद्योगपति अश्विनभाई खटारिया, गोपालभाई शिंगाला तथा अन्य।

रतलाम-अल्कापुरी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर पं. शिवशक्ति लाल शर्मा आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए आयोजित 'युवा सशक्तिकरण' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. गीता, राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षिका विनीता ओझा, शिवशक्ति लाल शर्मा आयुर्वेदिक कॉलेज स्टाफ, विद्यार्थी तथा अन्य।

नागठाणे-महा.। अभिनेत्री अदिति सारंगधर से स्नेह मुलाकात के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी।

मुंबई-मुलुंड(महा.)। शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित 'शिक्षाविद पुरस्कार सम्मान समारोह' में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी, हेवी वॉटर बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी एस. सत्यकुमार, पद्मश्री गजानन जगन्नाथ माने, ए.के. सिन्हा, बी.एम. सिन्हा, डॉ. मोसेज, युवराज कोल्हे, श्री कोळेकर, डॉ. कुमार, श्री परशुराम भांगे गुरुजी, सौ. पुष्पा भांगे, जेएमएफ संस्थापक अध्यक्ष डॉ. राजकुमार कोल्हे व संस्थापिका सचिव डॉ. श्रीमती प्रेरणा कोल्हे, कोषाध्यक्ष जान्हवी राजकुमार कोल्हे, एकनाथ चौधरी, श्रेया कुलकर्णी, योगेश शिरसाट, शर्वरी मैडम, प्राचार्या ज्योति व्यंकटरमण तथा अन्य। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को 'जे.एम.एफ. शिक्षाविद पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। पंडित शिव शक्ति लाल शर्मा आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज में आयोजित नशा मुक्ति युवा अभियान में उपस्थित ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. साक्षी, ब्र.कु. आरती तथा अन्य मेडिकल कॉलेज के छात्र-छात्राएँ व फैकल्टी सदस्य।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर विद्यार्थियों के लिए 'नई उमंग नई तरंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. रोहित,माउंट आबू, डॉ. अभिनव विजयवर्गीय, अहिंसा वेलफेयर सोसाइटी राजगढ़ के प्रभारी अरुण सतालकर, बॉयज हॉस्टल के प्रभारी मुकेश पिपलोदिया, पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर दीपक मोची तथा अन्य अतिथिगण।

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रभाग द्वारा संस्थान के मुख्यालय में आयोजित राष्ट्रीय मीडिया कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा को ग्लोबल स्पिरिचुअल लीडरशिप अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े व इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर इंग्लैंड के उपाध्यक्ष डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। साथ हैं अन्य गणमान्य व्यक्ति।

माउंट आबू-राज.। ब्रह्मा बाबा के समाधि स्थल शान्ति स्तम्भ पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् समूह चित्र में पंजाब के वित्तमंत्री माननीय हरपाल सिंह चिमा, ब्र.कु. मीरा,सुनाम,पंजाब, ब्र.कु. शशिकांत, पूर्व विधायक ब्र.कु. गंगाराम,तेलंगाना तथा अन्य अतिथिगण।

राजनांदगाँव-छ.ग.। नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान मानसरोवर में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. योगेश्वरी, ब्र.कु. रम्भा, ब्र.कु. प्रभा, पूर्व सांसद अभिषेक सिंह, तरुण लहरवानी, मुरलीधर सोमानी तथा अन्य।

किस्मत- पकड़ने से नहीं, छोड़ने से बनती

- ब्र.कु. प्रभु पसंद

देखो जीवन अपना रहस्य कैसे खोलता है, या जीवन में हमारे रहस्य कैसे खुलते हैं। हम सभी हमेशा एक बात को लेकर बड़े आतुर रहते हैं। और कहते हैं कि सबकुछ हमारी मर्ज़ी से होना चाहिए। लेकिन जैसे ही हम ये सब छोड़ देते हैं ना तो जीवन अपने राज़ खोलता है।

जितना हम किसी चीज़ को पकड़ते हैं उतना वो हमसे छूटती जाती है। जैसे आपने मुट्ठी बंद किया हवा नहीं रूक सकती। जैसे ही आपने खोल दिया तो पूरी दुनिया उसमें समा जाती है। तो जीवन और हमारी किस्मत दोनों का जो सम्बन्ध है वो एक-दूसरे के साथ निरंतर चलता रहता है। होता क्या है कि कोई भी ध्यान, कोई भी साधना, कोई भी सम्बन्ध का आधार त्याग है। इसीलिए कहा जाता है कि जीवन, कई बार हम सोचते है कि छोड़ना मतलब किसी की परवाह नहीं करनी है, ऐसा बिल्कुल भी नहीं है, बल्कि छोड़ना मतलब परवाह करना, बिना नियंत्रण के, बिना स्वामित्व के, बिना डर के। आपको पता होना चाहिए कि जैसे आजकल दुनिया में बहुत ही चर्चित विषय है कि कोई किसी को प्रेम नहीं करता, कहते भी हैं और सही भी है! लेकिन आपको पता होना चाहिए कि प्रेम हमेशा स्वतंत्रता में ही फैलता है।

अगर किसी चीज़ को आप पकड़ेंगे तो उससे डर पैदा होता है, आपको पता है किसी चीज़ को छोड़ना मतलब भरोसा करना कि यही हमारे लिए सही है। और जैसे ही हम किसी चीज़ को छोड़ते हैं जीवन आपको वही देगा जो ज़रूरी है, जो सही है। इसीलिए योग की परिभाषा यहाँ बदल जाती है, ज्ञान की परिभाषा बदल जाती है कि जब हम अपने पुराने विचार, पुरानी भावनाएं, पुराने कर्म जो कुछ भी हमने किया उसे छोड़ना, उसको भूलना, उसको वहीं पर त्याग देना, यही तो असली ध्यान और योग है।

जो हमने पकड़ा है वही हमारे अन्दर डर और भय पैदा कर रहा है। और जब हम जाग जाते हैं तो हमें पता चलता है कि ये तो अस्थाई है ये तो चला जायेगा। तो जब हम अपनी किस्मत को बदलना चाहते हैं, अपने को और अच्छा बनाना चाहते हैं और ऊपर उठाना चाहते हैं तो हमको वो हर चीज़ जो हमने होल्ड की हुई है, जो हमने अपने अन्दर पकड़ी हुई है, उसको छोड़ना है तो सारे रास्ते खुल जाते हैं। और सबसे ज़्यादा गहरा जो स्वभाव है वो है हमारे अहंकार को गिराना। हमेशा हम जब कोई चीज़ को पकड़ते हैं तो अहंकार जो जन्म देते हैं। जैसे उदाहरण लेते हैं- हमने इच्छा, लालसा, मोह, अहंकार की ऐसी बहुत सारी चीज़ें पकड़ी हुई हैं। जब हम इसको छोड़ेंगे तभी तो हमारे अन्दर प्रेम पैदा होगा। इसीलिए कहा जाता है कि जब हम छोटी-छोटी चीज़ों को छोड़ना शुरू करते हैं, या छोड़ना सीखते हैं, या होल्ड करना छोड़ देते हैं तो आने वाले समय में मृत्यु भी हमारे लिए एक अन्तरतम विषय हो जाती है। उदाहरण के लिए - शरीर छोड़ना भी आपको सहज लगेगा क्योंकि हमने और चीज़ों को छोड़ दिया। आपको पता है इस दुनिया में जो कुछ भी आप इन आँखों से देखते हैं उसे पकड़ने की कोशिश करते हैं। और आपको पता है जो चीज़ हम पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं वो आज नहीं तो कल छूट जाएगा।

जैसे ही हम किसी चीज़ छोड़ते हैं तो जीवन आपको वही देगा जो ज़रूरी है, जो सही है। इसीलिए योग की परिभाषा यहाँ बदल जाती है, ज्ञान की परिभाषा बदल जाती है कि जब हम अपने पुराने विचार, पुरानी भावनाएं, पुराने कर्म जो कुछ भी हमने किया उसे छोड़ना, उसको भूलना, उसको वहीं पर त्याग देना, यही तो असली ध्यान और योग है।

जैसे आपने देखा होगा कि सुबह सूरज कुछ और होता है, धीरे-धीरे दोपहर को कुछ और होता है, शाम को कुछ और होता है, बदल जाता है ना! ऐसे जीवन में जो कुछ भी हम इन आँखों से देख रहे हैं वो बदल जा रहा है। लेकिन उसको होल्ड करना, उसको पकड़ना, अपनी अवस्था को गिराना है। इसलिए जीवन को जीतने का तरीका है- हार मानना। हार मानने का मतलब जो भी है उसको छोड़ दें। पकड़ हमारे भविष्य से या हमारे अतीत से जुड़ी होती है। ध्यान से इस बात को समझना है, कोई भी पकड़, कोई भी चीज़ या तो भविष्य से जुड़ी होती है, या अतीत से जुड़ी होती है। और वही चीज़ हमको तंग करती है। अगर जीवन को जीतना है, किस्मत को बदलना है तो कर्म को अकर्म बनाना है।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर आयोजित 'नशा मुक्त भारत अभियान' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. यशिवनी,बिजलपुर, डेंटिस्ट डॉ. पूर्वा वंदानी, ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. अभिमन्यु वाधवानी एवं चार्टेड अकाउंटेंट लोकेश भाग्तानी।

जालना-महा.। कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डायरेक्टर सुनील रायथट्ठ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला एवं राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर।

मैसूर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज़ सरस्वतीपुरम सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू लाजी के नेतृत्व में मैसूर के दक्षिण रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें रेलवे विभाग के डीआरएम मुदित मित्तल, ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. दीपिका, ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. त्रिवेणी तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

भिलाई-छ.ग.। नवरात्रि के अवसर पर सेक्टर 7 स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, भिलाई इस्पात संयंत्र डायरेक्टर चितरंजन महापात्रा तथा अन्य अतिथिगण।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। 6वीं बटालियन के जवानों के लिए आयोजित तनाव मुक्ति कार्यक्रम में ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. वर्षा, कमांडेंट ऑफिसर सिद्धार्थ चौधरी, डॉ. पुष्पा पाण्डेय, डॉ. श्याम राव आदि की उपस्थिति रही।

केशोद-गुज.। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र पर समाज में व्याप्त नशे की बुरी लतों को समाप्त करने और स्वच्छ, स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने हेतु आयोजित 'नशा मुक्ति अभियान' कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. रूपा दीदी तथा अन्य बहनें।

औरंगाबाद-सदाशिव नगर(महा.)। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा तथा अन्य सभी शिक्षकगण।

रतलाम-गौरव पैलेस कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में डिप्टी कलेक्टर राधा महंत, संस्कार कोठारी रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट गवर्नर इलेक्ट,पंडित धर्मेन्द्र भट्ट,खजराना मंदिर,इंदौर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा, ब्र.कु. निशा,उमरिया, ब्र.कु. आशा,इंदौर, ब्र.कु. प्रीति,धामनोद, ब्र.कु. जयंती,झाबुआ, ब्र.कु. सीमा,रतलाम, ब्र.कु. शिवकन्या,इंदौर, ब्र.कु. धर्मा बहन, कार रैली संयोजक राकेश तथा अन्य।

हरपालपुर-छ.ग.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत हाई सेकेंडरी स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम में बच्चों को सम्बोधित करते हुए थाना प्रभारी पुष्पक शर्मा। कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आशा, नगर परिषद अध्यक्ष अमित अग्रवाल, समाजसेवी महेन्द्र सिंह परिहार, एसबीआई बैंक मैनेजर नितेश कुमार पांडे, हाई सेकेंडरी स्कूल के प्रधानाचार्य वीके सक्सेना, ए ड्रीम प्ले स्कूल के प्रधानाचार्य दिलीप नगरिया तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस पर जनपद पंचायत रायपुर कर्चुलियान स्थित मंगल भवन में जिला प्रशासन रीवा एवं ब्रह्माकुमारीज़ रीवा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, जनपद पंचायत रायपुर कर्चुलियान अध्यक्ष श्रीमती सुमन बलिकरण साकेत व उपाध्यक्ष राम लखन सिंह महगना, वाइस चेयरमैन,रेड क्रॉस सोसाइटी हाजी ए.के. खान, एसडीएम पी.एस. त्रिपाठी, संयुक्त संचालक पंचायत एवं सामजिक न्याय विभाग के अनिल दुबे, जनपद पंचायत रायपुर कर्चुलियान के मुख्य कार्यपालन अधिकारी संजय सिंह तथा अन्य।

परमात्म ऊर्जा

स्व-चिंतन और शुभ चिंतक

सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषताएं चाहिए- एक प्युरिटी और दूसरी यूनिटी। अगर प्युरिटी की भी कमी है तो यूनिटी में भी कमी है। प्युरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता, संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्युरिटी। मानों एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या या घृणा का संकल्प है; तो प्युरिटी नहीं, इम्प्युरिटी कहेंगे। प्युरिटी की परिभाषा में सर्व विकारों का अंश-मात्र तक न होना है। संकल्प में भी किसी प्रकार की इम्प्युरिटी न हो। आप बच्चे निमित्त बने हुए हो बहुत ऊंचे कार्य को सम्पन्न करने के लिए। निमित्त तो महारथी रूप से बने हुए हो ना। अगर लिस्ट निकालते हैं तो लिस्ट में भी सर्विसएबुल तथा सर्विस के निमित्त बने ब्रह्मा वत्स ही महारथी की लिस्ट में गिने हुए हैं। महारथी की विशेषता कहाँ तक आयी हुई है- सो तो हर-एक स्वयं जाने। महारथी जो लिस्ट में गिना जाता है वो आगे चल कर महारथी होगा अथवा वर्तमान की लिस्ट में महारथी है। तो इन दोनों बातों के ऊपर अटेन्शन चाहिए।

यूनिटी अर्थात् संस्कार-स्वभाव के मिलन की यूनिटी। कोई का संस्कार और स्वभाव न भी मिले तो भी कोशिश करके मिलाओ, यह है यूनिटी। सिर्फ संगठन को यूनिटी नहीं कहेंगे। सर्विसएबुल निमित्त बनी आत्माएं इन दो बातों के सिवाए बेहद की सर्विस के निमित्त नहीं बन सकती हैं, हद के हो सकते हैं। बेहद की सर्विस के लिए ये दोनों बातें चाहिए। सुनाया था ना- रास में ताल मिलाने पर ही होती है- वाह! वाह! तो यहाँ भी ताल मिलाना अर्थात् रास मिलाना है। इतनी आत्माएं जो नॉलेज वर्णन करती हैं तो सबके मुख से यह निकलता है- ये एक ही बात कहते हैं, इन सब का एक ही टॉपिक, एक ही शब्द है यह सब कहते हैं ना। इसी प्रकार स्वभाव और संस्कार एक-दो में मिलें, तब कहेंगे रास मिलाना।

मरोली-गुज.। विजयादशमी उत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित आर.एस.एस. शताब्दी वर्ष समारोह में आर.एस.एस. के तालुका संघ संचालक हसमुख भाई पटेल को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. मुकेश।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। विजयवाड़ा में ब्रह्माकुमारीज के द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'माइंड स्पा' के उद्घाटन पश्चात् राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करते हुए एन.टी.आर. जिले के जिलाधिकारी डॉ. जी. लक्ष्मीशा दिनकर तथा अन्य।

कथा सरिता

प्रतिबिम्ब

एक बार एक कुत्ता शीशों से भरे एक संग्रहालय में भागता हुआ आ गया। संग्रहालय अनोखा था; दीवारें, छत, दरवाज़े और यहाँ तक कि फर्श भी शीशों से बने थे। अपना प्रतिबिंब देखकर कुत्ता हॉल के बीचों-बीच आश्चर्य से ठिठक गया। उसे कुत्तों का एक पूरा झुंड ऊपर-नीचे, चारों तरफ से घेरे हुए दिखाई दे रहा था। कुत्ते ने दाँत दिखाए और भौंका, सभी प्रतिबिम्बों ने उसी तरह प्रतिक्रिया दी। डरकर कुत्ता उन्मत्त होकर भौंकने लगा; कुत्ते के प्रतिबिम्बों ने भी कुत्ते की नकल की और उसकी तीव्रता कई गुना बढ़ा दी। कुत्ता और भी ज़ोर से भौंका, लेकिन उसकी प्रतिध्वनि और भी तेज़ हो गई। कुत्ता एक तरफ से दूसरी तरफ उछल रहा था, जबकि उसके प्रतिबिम्ब भी इधर-उधर उछल रहे थे और अपने दाँत चटका रहे थे।

अगले दिन, संग्रहालय के सुरक्षाकर्मियों ने उस बेजान, लाचार कुत्ते को उसके हज़ारों प्रतिबिम्बों से घिरा हुआ पाया। कुत्ते को नुकसान पहुँचाने वाल कोई नहीं था। कुत्ता अपने ही प्रतिबिम्बों से लड़ते-लड़ते मर गया।

सीख- दुनिया अपने आप अच्छाई या बुराई नहीं लाती। हमारे आस-पास जो कुछ भी हो रहा है, वह हमारे विचारों, भावनाओं, इच्छाओं और कार्यों को दर्शाता है। दुनिया एक बड़ा आईना है। तो आइए, एक अच्छा पोज़ बनाएँ।

अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनें...

एक सफल युवा कार्यकारी अपनी नई जगुआर कार पड़ोस की गली में चला रहा था, तभी उसकी नज़र खड़ी कारों के बीच से एक बच्चे पर पड़ी जो तेज़ी से निकल रहा था। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, उसने अपनी गति थोड़ी धीमी कर ली, तभी एक ईंट उसकी कार के दरवाज़े से टकराई। उसने ज़ोर से ब्रेक लगाए और वापस उसी जगह पहुँच गया जहाँ ईंट मारी गई थी।
गुस्से से भरा आदमी अपनी कार से कूद पड़ा और पास खड़े बच्चे को चिल्लाते हुए पकड़ लिया, "ये सब क्या था? तुमने मेरी कार के साथ क्या किया? तुमने ऐसा क्यों किया?" वह छोटा लड़का थोड़ा डरा हुआ था, लेकिन बहुत विनम्र और क्षमाप्रार्थी था। "मुझे माफ करना, महोदय। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं और क्या करूँ," उसने विनती की। "मुझे ईंट फेंकनी पड़ी क्योंकि मेरी मदद के लिए पुकारने पर कोई और नहीं रुका।" आँसुओं से भरकर, उसने खड़ी कारों की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह मेरा भाई है, वह फुटपाथ से लुढ़ककर अपनी व्हीलचेयर से गिर गया है, और उसे बहुत चोट लगी है। मैं उसे उठा नहीं सकता।"

रोते हुए लड़के ने उस आदमी से पूछा, "क्या आप उसे वापस व्हीलचेयर पर बिठाने में मेरी मदद कर सकते हैं? उसे चोट लगी है, और वह मेरे लिए बहुत भारी है।" वह युवक भावुक हो गया और अपने

गले में तेज़ी से बढ़ती गांठ को निगलने की कोशिश करने लगा। फिर, उसने जल्दी से दूसरे बच्चे को उस जगह से उठाया और उसे वापस व्हीलचेयर पर बिठा दिया। उसने उस छोटे बच्चे को भी चोटों और कटों में मदद की।

जब उसे लगा कि सब ठीक हो जाएगा, तो वह अपनी कार में वापस चला गया। कृतज्ञ बालक ने कहा, "धन्यवाद, महोदय, और ईश्वर आपका भला करे।" युवक इतना घबरा गया था कि कुछ बोल ही नहीं पाया, इसलिए उसने उस छोटे लड़के को व्हीलचेयर पर बैठे अपने भाई को फुटपाथ पर धकेलते देखा। उस आदमी के घर वापस लौटने का सफर लंबा और धीमा था। जब वह कार से बाहर आया तो उसने अपनी कार के दरवाज़े पर लगे गड्ढे को देखा। नुकसान साफ दिखाई दे रहा था, लेकिन उसने उसे ठीक करवाने की ज़हमत नहीं उठाई। इसके बजाए, उसने उस गड्ढे को अपने पास रखा ताकि उसे यह संदेश याद रहे; "ज़िंदगी में इतनी तेज़ी से मत भागो कि किसी को तुम्हारा ध्यान खींचने के लिए तुम पर ईंट फेंकनी पड़े।"

शिक्षा- ज़िंदगी हमारी रूह में फुसफुसाती है और हमारे दिलों से बात करती है। कभी-कभी जब हम उसकी बात नहीं सुनते, तो वह हम पर ईंट फेंक देती है। हमारी मर्ज़ी है कि हम फुसफुसाहट सुनें या ईंट का इंतज़ार करें।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के दिव्य दर्शन भवन में आयोजित नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत नशा मुक्ति संकल्प कार्यक्रम में ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. आरती, नर्सिंग कॉलेज प्राचार्या बसंती कृष्णा धींवा, पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर पवन मिश्रा, एलआईसी अधिकारी पंकज माहेश्वरी, समाजसेवी राजेन्द्र पोरवाल तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

सूरत-लक्ष्मीकांत सोसाइटी(गुज.)। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में झाँकी में सुसज्जित चैतन्य देवियों की आरती उतारते हुए ब्र.कु. कल्पना व अन्य माताएं। कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पारुल की भी उपस्थिति रही।

परमात्म समर्पित संदेश वाहक- राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने अपना शरीर छोड़कर ईश्वरीय गोद ले ली है। उनका प्रयाण सभी के लिए प्रेरणास्रोत

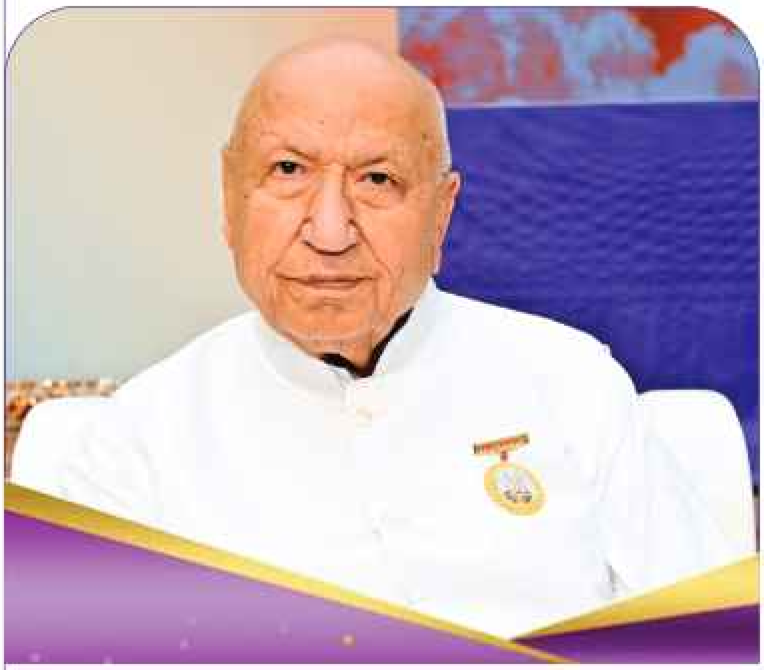

और आध्यात्मिक मशाल की तरह है, श्रीमद्भागवत गीता के माध्यम से गीता के भगवान का परिचय वे देश दुनिया को देने के लिए बड़े-बड़े सम्मेलन करते रहे। साधु-संत और महामंडलेश्वर भी उनके मुरीद थे। 9 अक्टूबर का दिन यज्ञ के इतिहास के महत्त्व को और योगी के तप को हमेशा दर्शाता रहेगा।

ईश्वरीय सेवा के प्रति समर्पित ब्रह्माकुमारीज़ का नेतृत्व ब्रह्माबाबा ने ओम मंडली के समय ही उस समय की बच्चियों के नाम ट्रस्ट बनाकर अपनी सारी संपत्ति ट्रस्ट में निहित कर संस्था का नेतृत्व भी बच्चियों को ही सौंप दिया था। लेकिन बिना भाइयों के सहयोग के इस ईश्वरीय यज्ञ के पूरा होने की कल्पना नहीं की जा सकती, तभी तो शीर्ष नेतृत्व बहनों का और सहयोग भाइयों का, इसी सोच के तहत यह आध्यात्मिक ईश्वरीय यज्ञ सन् 1936 से आज तक चल रहा है। सच तो यह है कि न किसी को पद की इच्छा और न ही पद का गुमान, बल्कि स्वयं देहाभिमान से परे रहकर यज्ञ सेवा में जुटे भाई-बहन अपना काम बड़े ही मनोयोग से अभी तक कर रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई जिनका जन्म 7 जनवरी 1934 में पंजाब के शहर अमृतसर में हुआ था।

राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई की आध्यात्मिक यात्रा सन् 1953 में एक कॉलेज स्नातक के रूप में युवावस्था से शुरू हुई। वे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय में मानव मूल्यों की शिक्षा पर कोर समिति के सक्रिय सदस्य रहे। उन्होंने सन् 1953 में वाणिज्य(ऑनर्स) और सन् 1955 में दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, तदुपरान्त उन्होंने सन् 1956 में चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में योग्यता हासिल की।

उन्होंने भारतीय उर्वरक निगम में 17 वर्षों तक सेवा कार्य करने के बाद ईश्वरीय सेवा के लिए खुद को पूरी तरह से समर्पित करने के लिए सन् 1973 में उप वित्त प्रबंधक के पद से इस्तीफा दे दिया था।

पुराने समय के सी.ए. होते हुए भी लौकिक हिसाब-किताब छोड़कर आमजन को गीता का भगवान कौन? यह संदेश देने में जुटे रहे। उनके द्वारा वर्ष में कम से कम दो बार गीता सम्मेलन व वर्ष में कम से कम दो बार संत सम्मेलन आयोजित किए जाते रहे।

जिसमें श्रीमद्भागवत गीता से लेकर वास्तव में परमात्मा शिव की पहचान क्या है और कैसे मिला जा सकता है। राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने व्याख्यान देने और राजयोग रिट्रीट आयोजित करने के लिए दुनिया के सभी पांच महाद्वीपों में यात्राएं की हैं। वे मॉरीशस में विश्व हिन्दू सम्मेलन, दक्षिण अफ्रीका में अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन, कजाकिस्तान में आध्यात्मिक संस्कृति के विश्व मंच जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रतिनिधि रहे हैं। उन्होंने वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दि में भी भाग लिया था और न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में ब्रह्माकुमारीज़ की मिलियन मिनट्स ऑफ पीस अपील परियोजना की प्रस्तुति भी की थी। वे मानव मूल्यों के अथक प्रवर्तक हैं और अपनी आध्यात्मिक यात्रा के पिछले आठ दशकों के दौरान उन्होंने पूरे देश में सामाजिक और आध्यात्मिक विषयों पर कई सेमिनार आयोजित किए हैं।

वर्तमान में राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ब्रह्माकुमारीज़ वैश्विक मुख्यालय के महासचिव पद पर होने के साथ-साथ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के वित्त एवं लेखा विभाग के प्रमुख, मुख्य प्रवक्ता व सर्वोच्च निकाय और प्रबंध समिति के सदस्य भी रहे हैं। उनपर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के एजुकेशनल सोसाइटी के सचिव, राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान फाउंडेशन नई दिल्ली के सचिव और ब्रह्माकुमारीज़ के राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के अध्यक्ष पद की भी ज़िम्मेदारी रही।

राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ब्रह्माकुमारीज़ ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर,गुड़गाँव,हरियाणा के प्रधान सलाहकार का दायित्व भी सम्भाला। जो उनकी कर्मठता, सजगता, समर्पण और त्याग का प्रमाण कहा जा सकता है।

शान्तिवन में आयोजित ग्लोबल समिट कार्यक्रम में सांसद सुधांशु त्रिवेदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन।

राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन जी के साथ उनका निजी सचिव ब्र.कु. आनंद।

राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन को रक्षासूत्र बांधते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,ओआरसी निदेशिका।

रक्षाबंधन पर्व पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् आध्यात्मिक चर्चा करते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी तथा अन्य।

बापदादा से मिलन मनाते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन। साथ हैं राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर तथा अन्य वरिष्ठ भाई-बहनें।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में उपस्थित राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोगी ब्र.कु. रमेश व राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर।

कार्यक्रम में उपस्थित बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन व राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी।

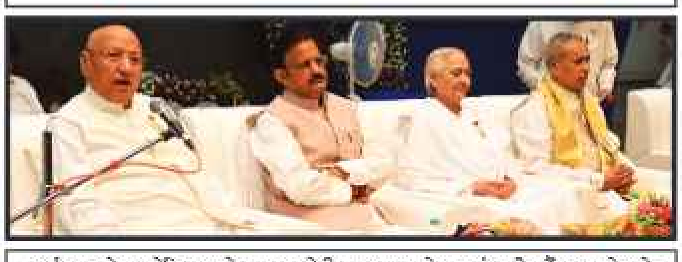

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन। मंचासीन हैं मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी,युवा प्रभाग की अध्यक्षा व राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय,अतिरिक्त महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़।

साधक स्वीकार करता है

हम सभी हमेशा जीवन में सुधार की बात करते हैं। सुधार का मतलब है हमेशा प्रयास की बात करते हैं और प्रयास का मतलब आने वाले समय में, आने वाले कल में हम सुधर जाएंगे, बदल जाएंगे। और जब हम सुधार की तरफ देखते हैं माना भविष्य की ओर देखते हैं, भविष्य का अर्थ है कि हम बदलेंगे ये निश्चित है भी, नहीं भी। अगर थोड़ा बदल गए तो उसका अहंकार है और अगर नहीं बदले तो हम परेशान हैं, ये है आम आदमी का जीवन।

जो साधना करता है, जो साधक है वो जीवन में कुछ अलग करना चाहता है। वो जीवन में हरेक चीज़ को स्वीकार करता है। तो साधारण जीवन सुधार करता है और साधक का जीवन स्वीकार करता है। हम सभी इन दोनों में से क्या हैं इसको देखो। क्योंकि हमको शांति, प्रेम और सौहार्द के साथ जीवन जीने का मन करता है। अगर हम ऐसा जीवन जीना चाहते हैं तो दुःख, पीड़ा, परिस्थिति, चिंता, भय जो कुछ भी हमारे साथ हो रहा है, जो कुछ भी हमारे जीवन में आता है वो ये झांकने आता है कि क्या ये आपको स्वीकार है? क्योंकि आपके द्वारा ही किया गया कर्म है जो आपके सामने आ रहा है। या आप इसका विरोध कर रहे हैं कि मेरे जीवन में ऐसा क्यों हो रहा है! जब आप इसको स्वीकार करते जा रहे हैं तो शांति बढ़ती चली जाएगी। और जैसे ही आप इसका विरोध करेंगे तो अशांति जीवन में जन्म ले लेगी।

तो हम सभी का जीवन भी इसी तरह से है। हम हर पल, हर क्षण, हरेक चीज़ के विरोध में लगे हुए हैं। विरोध का अर्थ ये नहीं कि बहुत बड़ा विरोध। लेकिन जो हम हैं और जो हम नहीं हैं, उन दोनों के बीच में परस्पर विरोध है। हम हैं कि हमारे साथ जो कुछ हो रहा है, जो स्थिति, परिस्थिति बदल रही है वो हमारी वजह से है इसको न मानने का पूरी तरह से दृढ़ संकल्प बनाया है। दूसरा है कि मान लेना। मैं ऐसा नहीं हूं जैसा सबको दिखता हूं। तभी छोटी-छोटी बात को लेकर परेशान होता हूं।

तो साधना एक दिन का विषय नहीं है, लम्बे काल का विषय है। अभ्यास का विषय है और वो अभ्यास एक दिन में नहीं होता उसके लिए निरंतर प्रयास की ज़रूरत होती है और उस प्रयास के लिए हमको बैठना पड़ेगा अपने साथ। इसलिए मनन-चिंतन शब्द का हम इस्तेमाल करते हैं। मनन है युद्ध के पहले की अवस्था, चिंतन है युद्ध के बाद की स्थिति। इसलिए मनन-चिंतन के आधार से हम सबको इस बात को समझ लेना है। जैसे जो चीज़ अस्थाई है- जैसे पीड़ा है, भय है, दुःख है, चिंता है, परिस्थिति है वो बदलने आया है। ये बदल जाएगा, ये आपको बदलने नहीं आया है। लेकिन हम सभी क्या करते हैं इसको लेकर बैठ जाते हैं।

इसीलिए जैसे कहा जाता है कि सत्य आसान बहुत है लेकिन कठिनाई तो विरोध में है। जैसे सूरज या हवा हमेशा से है, पहले से ही है केवल हमने खिड़की बंद की हुई है, खोल देंगे तो रोशनी भी आयेगी और हवा भी आयेगी। इसलिए जहाँ प्रेम होता है वहाँ विरोध होता ही नहीं। वैसे ही स्वीकृति है, बस वैसा ही हमारा जीवन है। इसलिए कहा जाता है कि बिना निर्णय, बिना टिप्पणी, बिना देखा समर्पण। पहली सीढ़ी है स्वीकार करने की। इसलिए कहा जाता है ना जीवन को बिना भय के बहने देना, बिना चिंता के बहने देना। जैसा है वैसे देखना, इसी को कहा जाता है जीवन। जैसे एक ऐसी नदी जो बिना मानचित्र के सागर तक पहुंच जाती है। इसलिए समर्पण का सीधा-सा अर्थ है कि इस दुनिया में मेरा कुछ भी नहीं है। जैसे आप कहते हैं, मैं कहता हूं ज़िम्मेदारी, असफलता, सब तुम्हारे साथ हो जाती है और जैसे कहते सब हो रहा है मैं केवल निमित्त हूं वहीं से हमारा सारा भार उतर जाता है और हमारी शांति बढ़ जाती है।

- राजयोगी ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

तो एक साधक का जीवन हम सभी को अपनाना चाहिए। साधक जैसे हरेक चीज़ को स्वीकार करता चला जाता है, अच्छा या बुरा, उसका विरोध नहीं कर रहा है, उसके जीवन में शांति बढ़ती चली जाएगी और अशांति दूर हो जाएगी। और जैसे ही आप चाहेंगे कि नहीं मैं इसको सुधार सकता हूं, मैं ऐसा बनके दिखाऊंगा वैसे ही हम असहज हो जाएंगे, अतृप्त रहेंगे। इसीलिए साधक बनना है लेकिन वैसा बनना है जैसा परमात्मा चाहते हैं। केवल देखना है साक्षी होकर, निमित्त होकर, समर्पण भाव से। फिर देखो जीवन कितना सहज और सरल लगता है!

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न- मेरे और मेरे पति के बीच में बहुत ही गलतफहमी हो चुकी है। मुझे उनका व्यवहार समझ में नहीं आ रहा है कि वो कौन-सी बात से मुझसे दुःखी या परेशान हैं। हमारे बीच की प्रॉब्लम इतनी बढ़ गई है कि हम एक-दूसरे से बात तक नहीं करते जिसके कारण मेरा मन बहुत परेशान रहता है और मैं मेडिटेशन भी सही तरीके से नहीं कर पाती हूं। तो क्या करना चाहिए?

उत्तर- समस्या तो मैं इसको विकराल ही कहूँगा क्योंकि घर में साथ रहना, साथी हैं भले ही काम पर जाते हों लेकिन आपस में बातचीत ना हो तो घर में खुशी का माहौल तो नहीं रहेगा। गमगीनी सी छाई होगी। और इसका इफेक्ट बच्चों पर बहुत बुरा होता है। अगर छोटे बच्चे हैं तो लोग समझ नहीं सकते इन चीज़ों का इफेक्ट छोटे बच्चों पर कितना बुरा होता है। तो वो न बोलते हों किसी से नाराज़ हों। तो कुछ स्वमान मैं आपको दे रहा हूं, आप इन स्वमानों का अभ्यास करना:-

मैं एक महान आत्मा हूँ, इस घर की ईष्ट देवी हूँ और उन्हें भी देखना, दूर से ही देखना भले कि वो भी एक महान आत्मा है, वो भी भगवान का बच्चा है, बहुत अच्छा है। तो जितना आप स्वमान में रहेंगे मैं महान आत्मा हूँ, ईष्ट देवी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ। जितना आप स्वमान में रहेंगे उतना ही आपका सम्मान बढ़ेगा। और उसके लिए आप जो जितना सोचेंगे कि ये महान आत्मा है, ये बहुत अच्छे हैं उतना ही आपसे गुड वायब्रेशन्स उनको जाएंगे और उनके विचारों में परिवर्तन आएगा। भोजन बनाते समय मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। बहुत अच्छा अभ्यास करना ही है। आधा घंटा उनके लिए मेडिटेशन भी करें।

प्रश्न- मैं योग भट्ठी कैसे करूं जिससे कि मेरी सारी इच्छा पूरी हो जाए, मैं जो चाहती हूँ बाबा मुझे दे दें, मेरी बात सुन लिया करें?

उत्तर- अपनों की बात सुनी जाती है। जहाँ बहुत प्यार होता है वहाँ सुनवाई होती है। भगवान ने तो सुनवाई की है हम सबकी, हम उनकी कम सुनते हैं। आप जितना सुनोगे वो भी उतना ही आपको सुनेगा बल्कि दस गुना ज्यादा सुनेगा। इसलिए चेक कर लो मैं उसकी बातों को सुनती हूँ? और मैंने ऐसी इच्छाएं तो नहीं रखी हुई हैं जो सांसारिक हैं और वो जानता है कि अगर ये पूरी हो गई तो ये फिर मेरी तरफ नहीं आएगी। कई ऐसा तो नहीं आपने सोचा हुआ हो मुझे करोड़पति बना दो। और प्रभु जी सोचते होंगे कि इन्हें करोड़पति बना तो दूं लेकिन ये फिर मुझे रोड पर छोड़ देंगे। मेरे साथ मित्र डे भी नहीं निभाएंगे। इसलिए अपनी इच्छाओं को भी एक बार जांच लें। इच्छाओं में कोई स्वार्थ तो नहीं है! इच्छाएं अगर निष्काम भाव की हैं, इच्छाएं अगर विश्व कल्याण की हैं तो योग से वो अवश्य पूरी हो जाती हैं। लेकिन आपको इन सबके लिए 4 घंटे योग रोज़ ज़रूर करना चाहिए।

प्रश्न- वैसे क्या इच्छाओं के साथ योग करना चाहिए या निष्काम भाव से?

उत्तर- एक्चुअली तो निष्काम भाव से योग करने से हमारे विकर्म नष्ट होते हैं और भाग्य स्वतः ही उदय हो जाएगा। लेकिन फिर भी कईयों को होता है कुछ चाहिए इसलिए योग लगाऊं, तो कर सकते हैं। योग बहुत अच्छा करना है लेकिन इच्छा ऐसी न हो आपका अकल्याण कर दे।

प्रश्न- नौकरी में सफलता के लिए क्या करें? नौकरी भी तो एक कामना व इच्छा ही है?

उत्तर- ये कामना ऐसी है जिसको कामना न कहकर आवश्यकता कहेंगे। ये उनकी आवश्यकता है, उनको अपना परिवार पालना है। उनको नौकरी चाहिए इसमें हम निष्काम भाव से नहीं रह सकते। हाँ, अगर हमारा योग बहुत अच्छा है तो स्वतः हमारा हर काम सहज सफल होंगे। लेकिन योग अच्छा नहीं है तो एक घंटा योग करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, इस संकल्प से। बाबा के नाम एक पत्र लिख दें रात को। बाबा को अर्पित करें मुझे ये चाहिए बाबा, आपकी मदद चाहिए मुझे। मुझे मदद करो जॉब होगी तो मैं अपने परिवार को ठीक से चला सकूंगा। क्योंकि ये आवश्यकता है। इसको कामना नहीं कहते। तो निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

प्रश्न- किसी ने कहा है कि मैं फलाने व्यक्ति से ही शादी करना चाहती हूं या चाहता हूं और इसके लिए मैं योग का अभ्यास करूं या फिर मेरी बिटिया बड़ी हो गई है, उसकी शादी नहीं हो रही है या फिर बेटा बड़ा हो गया है, नौकरी भी है पर शादी नहीं हो पा रही है, तो हम किस प्रकार से योग करें?

उत्तर- ये भी इनकी आवश्यकता होती है। पर जहाँ तक लड़के-लड़कियों की शादी की बात है, ऐसी बहुत सारी बातें आती हैं। मैं इससे ही शादी करना चाहती हूं लेकिन वो एक साल के बाद कहेंगी अब मैं इसका मुंह भी नहीं देखना चाहती हूँ, समस्या यहां होती है। इसलिए योग सफल तो कर दे फिर योग करेंगी कि मैं इसका मुंह नहीं देखना चाहती हूँ। अब कौन-सा योग करूँ ये बताओ? इसलिए इन चीज़ों के लिए योग नहीं है। योग तो श्रेष्ठ कार्यों को सफल करने के लिए है। हाँ, किसी के बच्चे ज्ञान में नहीं हैं उनकी तो शादी करानी ही है। तो वो एक घंटा योग करेंगे। तो इसमें भी सहज सफलता हो जाती है। लेकिन सिर्फ आवश्यकता के लिए योग करेंगे फिर निष्काम भाव से योग चले।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

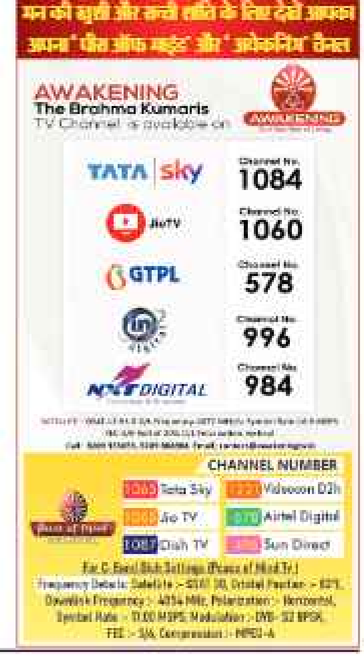

सबकुछ छोड़, स्वच्छ होकर जाने के लिए तैयार हो जाओ...!!

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

हम बहुत सौभाग्यशाली हैं जो इस सृष्टि चक्र में स्वयं भगवान ने हमें चुना। भगवान की नज़र हम पर पड़ी और याद दिलाया बच्चे तुम ही सतयुग के मालिक थे। अब वो ही घड़ी ड्रामा के अंदर आ पहुँची। आप जो भी इन आँखों से देख रहे हैं वह सब परिवर्तन होगा। आप तैयार हो जाओ। स्वयं परमात्मा आपको दु:खों से छुड़ाकर, श्रेष्ठ श्रृंगार कर वापिस ले जायेंगे। ये सुहावना समय बाप और बच्चों के मिलन से सर्व कमी-कमज़ोरियों व पाप को दग्ध कर फिर से अपनी राजधानी में राज्य करना है। तैयार हो जाइए, इस समय का लाभ उठाइए।

ये विश्व एक सुन्दर ड्रामा है। हम सभी आत्माएं पार्ट बजा रही हैं। याद रखेंगे हम ड्रामा को यूज़ कैसे-कैसे करें जो हमारी स्थिति अचल-अडोल हो जाए, जो हमारा चित्त शांत हो जाए। तो ड्रामा में सबका भाग्य अपना-अपना है। ड्रामा में सबके कर्मों की कहानी अपनी-अपनी है। इस ड्रामा में जो भी जिसके साथ हो रहा है उसका ज़िम्मेदार वो स्वयं ही है। बड़ा कष्ट होता है ना सबको, जब वो अपने प्रियजनों को कष्ट होते हुए देखते हैं और हमें ये तो पता नहीं होता कि इनके कर्मों की कहानी क्या है? और बिना विकर्मों के किसी को कष्ट नहीं मिलता।

कुछ बच्चे जन्म से ही दु:खी दिखाई देते हैं। जो मनुष्य का बचपन होता है खेलने, कूदने, हँसने, बहलने का, निश्चिंतता का वो उनको है ही नहीं। जन्म लिया और लगता है कि किसी मानसिक डिफेक्ट से प्रभावित हैं ये आत्माएं। किसी के हर्ट में छेद है, किसी की आँखें गड़बड़ा रही हैं। किसी का ब्रेन डेवलप नहीं हुआ है। इन सबके पीछे मनुष्य के कर्म ही हैं। पाप कर्म कह सकते हैं हम। तो हमें इस ज्ञान को याद रखते हुए कि सबके कर्म ही जो कुछ भी उसके साथ हो रहा है उसके लिए ज़िम्मेदार हैं। अपने को बहुत हल्का करना होगा। और अब मदद करनी होगी ऐसी आत्माओं की।

मान लो आपका बच्चा बचपन से ही किसी विशेष व्याधि से ग्रस्त है, वो सफर कर रहा है तो आपका ये कर्त्तव्य है कि आप उसे मदद करें। मेडिकली हो सके तो मेडिकली, नहीं तो स्पिरिचुअली। और स्पिरिचुअल पॉवर में और ज्ञान में बहुत बड़ी शक्ति है। जो बिगड़े हुए खेल को भी ठीक कर देती है। तो मदद करना, वायब्रेशन्स देना, उनके लिए योग अभ्यास करना ताकि उनके पूर्व के विकर्म नष्ट हों। दो हाथ मिलें। सब जानते हैं कि राजयोग के माध्यम से पास्ट के जो विकर्म हैं, पापकर्म हैं वो जलने लगते हैं। अगर आप एक अच्छा योग करते हैं, अच्छा माना एकाग्रता के साथ प्रारम्भ करेंगे तो सात दिन के बाद ही आपको उसका इफेक्ट दिखने लगेगा। और साथ में ये भी संकल्प कर दें कि जो इनको ये तकलीफ हो रही है, जो इनका पीछे विकर्म है वो इस योगबल से नष्ट हो जाए। तो योग की शक्ति उधर ही चलेगी, डायरेक्ट हो जाएगी। और वो विकर्म जैसे-जैसे नष्ट होगा वैसे-वैसे उसकी बीमारी में राहत मिलती रहेगी। तो ड्रामा का इस तरह हम यूज़ करेंगे।

ड्रामा का यूज़ के बारे में हम पहले भी चर्चा कर आये हैं कि हमें क्या, क्यों के क्वेश्चन से पार रहना है। सबको मिला हुआ पार्ट सब बजा रहे हैं। इसलिए यहाँ किसी का कोई दोष नहीं है। तो एक प्रैक्टिस करेंगे, नो क्वेश्चन। अच्छा चिंतन करके नो क्वेश्चन और नो कम्प्लेन की अच्छी अनुभूति कर लें। सब निर्दोष हैं वो तो उन्हें पार्ट मिला हुआ है। अगली बात जो बहुत गहरी है। ये ड्रामा पूरी तरह कल्याणकारी है। ड्रामा का हर सीन कल्याणकारी है। जबकि हमें दिखता है कि ये तो कल्याणकारी नहीं है। तो हम इसकी गुह्यता को समझते हुए चलें। क्योंकि किसी कर्म के कारण वो बुरा सीन आया है। कर्म हटते ही वो बुरा सीन भी लोप हो जाएगा। थोड़ी हमें वेट अवश्य करनी पड़ती है। लेकिन अपने-अपने ज्ञान-योग को बहुत अच्छा बढ़ाते चलना है। तो ये ड्रामा का हर सीन बहुत कल्याणकारी है। बहुत अच्छा चिंतन करेंगे।

मैं बहुत सारे उदाहरण दे सकता हूँ, आने वाले समय में बहुत खून बहेगा धरा पर लेकिन उसमें कल्याण क्या होगा, धरती फिर से उपजाऊ हो जाएगी। जो धरती अब फल नहीं दे रही है वो धरती फिर से इतनी उपजाऊ हो जाएगी कि सहज भाव से अन्न, फल प्रकृति की सब चीज़ मनुष्य को प्राप्त हुआ करेगी। देखो कपड़े तो बनेंगे ना बहुत सुन्दर देवताओं के। उन कपड़ों को बनाने के लिए किसानों के पास जो साधन होते हैं वो भी आएंगे। जिस तरह की खेती होती है वो भी होगी। कोई चीज़ फलों से, फूलों से निकलती है। कोई विशेष तरह के पौधों से निकलती है। धागे बनते हैं, कुछ कपास से बनते हैं। वो सब चीज़ें बड़ी सहज भाव से उगती रहेंगी। क्योंकि प्रकृति देवताओं की दासी होगी, सबकुछ प्रदान करेगी। तो हमें बहुत अच्छा चिंतन करना है और हमारे साथ जो कुछ भी होता है उसको इस नज़र से देखना है कि ये सब कल्याणकारी है। बहुत बुरा-बुरा भी होता है, मान लो एक्सीडेंट हो गया दो लोगों की मृत्यु हो गई तो सोचना भी मुश्किल है कि ये कल्याणकारी है। बोलने से तो नुकसान हो जाएगा। लेकिन उसके पीछे क्या कल्याण था, उन आत्माओं के कर्मों की गुह्य गति क्या काम कर रही थी जो उसी स्पॉट पर, उसी कारण से, उन्हीं साधनों से उसका एक्सीडेंट हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। ये चीज़ जब हम जानते जाएंगे तो हमारा मन बहुत निरसंकल्प होता जाएगा।

तो ड्रामा को ज़रा विशाल दृष्टि से देखें। हमने हीरो पार्ट बजाए हैं। सतयुग से पार्ट बजाते-बजाते मैं आत्मा कलियुग के अन्त में आ गई हूँ। अब मुझे घर वापिस चलना है। तो इस ड्रामा के कुछ और वंडरफुल सीन हमें देखने होंगे। महाविनाश होगा, महान परिवर्तन होगा। वो हमें देखना पड़ेगा लेकिन उसके बाद कल्याण ये होगा कि इस धरा पर स्वर्ग आ जाएगा। पाप आत्माएं, कलियुग की ये गंदगी सब नष्ट जाएंगी। तो हम इस ड्रामा को आदि से अंत तक देखा करें कि अब समय आया है, हमें सबकुछ छोड़कर वापिस चलना है।

उदवाड़ा-गुज.। गुजरात के वित्तमंत्री कनुभाई देसाई से स्नेह मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पारुल एवं ब्र.कु. मीनल। साथ हैं वापी इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के प्रमुख सतीश जी।

बैकुंठपुर-छ.ग.। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन सत्र में ब्र.कु. रेखा, पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं विधायक भैयालाल राजवाड़े, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती नमिता शिवहरे, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष श्री कृष्ण बिहारी जायसवाल, एसईसीएल मैनेजर महेश कुमार नक्षणे, प्रधान पाठक दीपक तिर्की तथा अन्य की उपस्थिति रही।

भाटापारा-छ.ग.। नवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. प्रभा, वरिष्ठ भाजपा नेता शिवरतन शर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष अश्विनी शर्मा, पार्षद भुवन सिंह ठाकुर एवं बिजनेसमैन ज्ञान सिंह।

मरोली-गुज.। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर 'विकसित और नशा मुक्त भारत' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. भानु दीदी। साथ हैं कस्तूरबा सेवाश्रम द्वारा संचालित व्यसन मुक्ति केन्द्र की इंचार्ज श्रीमती पल्लवी जोशी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

अंबिकापुर-चोपड़ा पारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में ब्रह्माकुमारीज द्वारा उत्कृष्ट योगदान हेतु ब्र.कु. विद्या बहन को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए रेड क्रॉस सोसाइटी के चेयरमैन आदित्यायेश्वर शरण सिंह देव,सरगुजा। साथ हैं रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य आर्यन सिन्हा तथा अन्य।

औरंगाबाद-सदाशिव नगर(महा.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत छत्रपति संभाजीनगर सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित कार्यक्रम में विख्यात राजमाता कोचिंग क्लासेज में बच्चों को नशे के प्रति विशेष मोबाइल एडिक्शन प्रति जागरूक करते हुए ब्र.कु. शोभा। मौके पर उपस्थित रहे डॉ. प्रतिभा,एमडी,एसोसिएट प्रोफेसर इन एफडीएनएम कॉलेज इन द डिपार्टमेंट ऑफ ओबीजीवाई, राजमाता क्लासेज के संस्थापक सर किरण जगताप और दत्ता लोखंडे तथा अन्य।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। नवरात्रि के अवसर पर लगाई चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानू, उद्योगपति वासुदेव जैसवानी, खमरिया फैक्ट्री के जे.डब्ल्यू.एम. महेन्द्र सिंह ठाकुर तथा अन्य।

जालना-महा.। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा 'स्वस्थ मन, स्वस्थ तन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. शीतल, ब्र.कु. मंगला,बुरहानपुर, राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर, भाजपा महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष श्रीमती संध्या, ब्राह्मण सभा के उपाध्यक्ष रमेश देहेडकर, उद्योगपति जगदीश राठी एवं उद्योगपति राजेश बंसल।

इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर थाना रावजी बाजार में आयोजित कार्यक्रम में सभी पुलिस के जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. यशवनी, ब्र.कु. शारदा, थाना प्रभारी उमेश यादव तथा अन्य पुलिस के जवान व अधिकारीगण।

सरायपाली-छ.ग.। शिक्षक दिवस एवं विश्वकर्मा जयंती के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र पर आयोजित सभी सेवानिवृत्त शिक्षकों के सम्मान कार्यक्रम में ब्र.कु. अहिल्या, ब्र.कु. सुनीता, स्वर्गीय वीरेन्द्र बहादुर सिंह महाविद्यालय प्राचार्या श्रीमती संध्या बोई, भारती विद्या भारती प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती सरिता साहू, शासकीय उच्चतम विद्यालय के प्राचार्य भोजराम पटेल, शासकीय प्राथमिक शाला प्रिंसिपल चन्द्रहास पात्र तथा अन्य।

नीमच-ज्ञान मार्ग(म.प्र.)। हार्टफुलनेस और ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सानिध्य में सी.टी.सी. हाउस पर आयोजित आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में सबजोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. श्रुति, कार्यक्रम की प्रमुख व्यवस्थापक आई.जी. की धर्मपत्नी श्रीमती रजनी दत्ता एवं श्रीमती दीपाली अरोरा। कार्यक्रम में लगभग 40 सेवा संस्थाओं की महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इंदौर-सुदामा नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल प्रभाग द्वारा मूक बधिर स्कूल एवं कॉलेज स्किम नंबर 71 में आयोजित नशा मुक्ति कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दामिनी, स्कूल की संचालिका ऊषा, पंजाबी स्कूल सचिव अपिता पराठे तथा स्कूल के विद्यार्थीगण।

अहमदनगर-महा.। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व हैदराबाद लोकसभा क्षेत्र के सांसद असदुद्दीन ओवैसी से स्नेहभरी मुलाकात कर संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सुप्रभा एवं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। साथ हैं पूर्व सांसद तथा ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन के महाराष्ट्र अध्यक्ष इम्तियाज जलील सैयद, ब्र.कु. उज्वला तथा अन्य।

महुडी-गुज.। गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनीषा। मौके पर उपस्थित रहे मनसा तालुका के विधायक जेएस पटेल, अनिल भाई पटेल अध्यक्ष गांधीनगर जिला भाजपा, डीडी पटेल पूर्व अध्यक्ष गुजरात राज्य पुलिस व आवास निगम पूर्व विधायक अमित चौधरी।

सारनी-म.प्र.। भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा 'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' युवा समिट में सतपुड़ा ताप विद्युत गृह के सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर एस.एस. ठाकुर, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. स्मृति, ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. दिनेश तथा अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

राजकोट-गायकवाडी(राज.)। राजकोट एयरपोर्ट पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योत्सना तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें एवं स्टाफ।

पूर्णा-परभणी(महा.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर गर्भ संस्कार शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रणिता, ब्र.कु. स्नेहलता,हदगांव, ब्र.कु. डॉ. आरती, जयश्री पवार,नांदेड़, बाल विकास प्रकल्प अधिकारी श्रीमती मनीषा काळे, डॉ. श्रद्धा वाघमारे, डॉ. जगरानी ठाकुर एवं डॉ. स्वाती सोळंके।

हथबंध-तिल्दा(छ.ग.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत हथबंध के शासकीय हाई स्कूल और आईटीआई कॉलेज में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में विद्यार्थियों को व्यसनों से होने वाली बीमारियों और दुष्परिणाम के बारे में जागरूक करते हुए ब्र.कु. प्रियंका।

अनुभव

यहाँ से मुस्कुराने की सीख लेकर जायें...

मेरे कहने से एक चीज़ ज़रूर सीख करके चले जाना कि यहाँ से हम स्थूल सौगात लेकर जायें या न जायें लेकिन यहाँ से 'एक मुस्कुराहट की सौगात' ज़रूर ले जायें। यहाँ प्रतिपल जैसे मुस्कुराते हो आप सदा मुस्कुराते रहना। क्योंकि मुस्कुरा के जिसको गम का ज़हर पीना आ गया, यह हकीकत है जहां में उसको जीना आ गया। ज़िंदगी जीनी है तो प्रत्येक परिस्थिति में मुस्कुराइए, आनंद लीजिए। यह मैंने ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थान में आयोजित 'संत सम्मेलन' में देखा, अनुभव किया। ये कहना है शिवयोगी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर डॉ. यमुना पुरी जी महाराज का। जिनके अनुभव के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं...

-शिवयोगी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर डॉ. यमुना पुरी जी महाराज

बोलते हुए 38 वर्ष बीत गए मुझे, लेकिन यहाँ बोलने से ज़्यादा सुनने में आनंद आ रहा है। और जो प्रवक्ता होते हैं ना वो जल्दी किसी की सुनते नहीं हैं। और मजे की बात यह है कि यहाँ सुनने का आनंद आ रहा है।

एक बात मैं आपको निवेदन कर दूं कोई मंगलाचरण नहीं, कोई सम्बोधन नहीं। 1000 बुद्ध एक साथ बैठ करके कहीं साधना करें जैसी शांति 1000 बुद्धों की साधना से होनी चाहिए, वैसी शांति इस शांतिवन में आकर के प्राप्त होती है। विश्व भर में करीब-करीब दस हज़ार धर्म सम्प्रदाय प्रकट हुए, आप मेरी बात को अन्यथा नहीं लेना पुरूष वर्ग, लेकिन सभी सम्प्रदाय और सभी धर्म पुरुष प्रधान रहे हैं। यह संगठन ऐसा है जो महिला प्रधान है। आपको मैं निवेदन करूं, मुझे निराकार और साकार में नहीं जाना। लेकिन आपने भगवान श्री राम के हज़ारों मंदिर देखे होंगे लेकिन विश्वास कीजिए राम के साथ रावण का मंदिर मिलने वाला नहीं है। भगवान कृष्ण के हज़ारों मंदिर देखे होंगे लेकिन कृष्ण के साथ कंस का मंदिर मिलने वाला नहीं है। भगवान राम ने रावण को मारा मगर पूजनीय नहीं बना पाए। भगवान कृष्ण ने कंस को मारा मगर पूजनीय नहीं बना पाए। हमारे हिंदू सनातन धर्म में माँ भगवती दुर्गा ऐसी हैं जिन्होंने भैरव को मारा लेकिन भैरव के हज़ारों मंदिर भी बनवा दिए। मतलब क्या है कि माँ अगर किसी को मारती है तो भी पूजनीय बना देती है। ये ब्रह्माकुमारी संगठन भी ऐसा है ये आपको सुधार करके आपके जीवन में परिवर्तन ले आता है।

और मैं आपको निवेदन करूं हज़ारों सम्प्रदाय हैं सबने अपनी-अपनी बात प्रतिपादित की, किसी ने किसी देवता को प्रतिपादित किया, किसी ने निराकार को स्वीकारा, किसी ने साकार को स्वीकारा। लेकिन यह ब्रह्माकुमारी संगठन ऐसा है जिसने आज तक किसी का खंडन नहीं किया। सबकी पुष्टि जहाँ होती है वो ये संगठन है।

मैं आपको निवेदन करूं यह जो हैदराबाद सिंध प्रांत से चला हुआ ये जो विशिष्ट संगठन है, आप सब तो जानते ही होंगे अंग्रेजों को भी जिसके विषय में विचार करना पड़ा था। किसी और सम्प्रदाय को बैन नहीं कर पाए थे। लेकिन इस संगठन की बात मैकाले के कहने पर कहा कि अगर यह पूरे विश्व में ये शांति का धर्म फैल गया तो फिर अंग्रेजों का शासन, उनका कपट चलने वाला नहीं है। मैं आपको निवेदन यह करना चाहता हूँ कि यह जो संगठन 1960 के बाद चला, अगर 100-200 वर्ष पहले चला होता तो ना आपके भारत को फौज की ज़रूरत थी, ना आपके भारत को पुलिस की ज़रूरत थी, ना आपके भारत को अदालत की ज़रूरत थी। मजे की बात देखिए कि जो पूरे विश्व को शांति का संदेश देता है, उसी भारत में आज हिंदू-मुस्लिम के नाम पर कितना उपद्रव हो रहा है। विचार कीजिए अगर यह विश्व शांति का संदेश आबू से पूरे भारत में पहुंच जाए तो क्या कहीं पर झगड़ा होगा हिंदू-मुस्लिम का? आप सब लोगों को निवेदन यह कर दूं कि यहाँ से और कुछ सीख करके जाना या ना जाना वो मुझे नहीं पता। वह आपका व्यक्तिगत विषय है। मेरे कहने से एक चीज़ ज़रूर सीख करके चले जाना कि यहाँ से हम स्थूल सौगात लेकर जायें या न जायें लेकिन यहाँ से एक मुस्कुराहट की सौगात ज़रूर ले जाना। यहाँ प्रतिपल जैसे मुस्कुराते हो आप सदा मुस्कुराते रहना। क्योंकि मुस्कुरा के जिसको गम का ज़हर पीना आ गया, यह हकीकत है जहां में उसको जीना आ गया। ज़िंदगी जीनी है तो प्रत्येक परिस्थिति में मुस्कुराइए, आनंद लीजिए।

छोटा उदेपुर-गुज.। गोवा के सी ब्रिज सरोवर पोर्टिको होटल में इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, यू.एस.ए. द्वारा डॉ. ब्र.कु. मोनिका को उनके आदिवासी एरिया में की गई आध्यात्मिक सेवाओं पर उनको चौथी बार मानद डॉक्टरेट डिग्री,पीएचडी से सम्मानित करते हुए गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री दिगंबर कामत, प्रो. डॉ. रोशन पालेवर,ग्लोबल साइंटिस्ट ग्रुप ऑफ सी.ई.ओ. डीओसीआरओएसएच ग्लोबल फाउंडेशन, डॉ. विजय एन. सूर्यवंशी,आई.ए.एस. एक्साइज कमिश्नर,महाराष्ट्र सरकार, प्रो. ललित कुमार सागर,वाइस चांसलर वेंकटेश्वर ओपन यूनिवर्सिटी तथा अन्य।

ग्वालियर-इंद्र गंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा 13वीं वाहिनी विशेष सशस्त्र बल,एसएएफ 13बटालियन में सभी जवानों के लिए 'तनाव प्रबंधन, खुशनुमा और स्वस्थ जीवन शैली' विषय पर आयोजित शिविर में सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन। कार्यक्रम में प्रेरक वक्ता एवं वरिष्ठ राजयोग ध्यान प्रशिक्षक ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. सुरभि, ब्र.कु. रोशनी, ब्र.कु. पवन, एस.ए.एफ. 13 बटालियन के प्रभारी सेनानी अनुराग पांडे, सहायक सेनानी गुलबाग सिंह, मेडिकल ऑफिसर डॉ. ओ.पी. वर्मा, निरीक्षक मुनेन्द्र सिंह भदौरिया, निरीक्षक धर्मेंद्र वर्मा, निरीक्षक मुकेश परिहार, निरीक्षक पुष्पेन्द्र सिंह भदौरिया, निरीक्षक राय सिंह जयंत, समस्त पीटीएस स्टाफ एवं प्रशिक्षणार्थी की उपस्थिति रही।

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के दिव्य संस्कार भवन में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, गणेश कुमार चतुर्वेदी,अध्यक्ष वरिष्ठ जन परिषद, एस.के. चतुर्वेदी,प्रांतीय अध्यक्ष पेंशनर समाज तथा संगठन के अन्य वरिष्ठ सदस्य गण।

मऊगंज-म.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित 'नशे से दूरी है ज़रूरी' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पूर्णिमा, ब्र.कु. मानसी, पुलिस अधीक्षक दिलीप सोनी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह, टीआई गिरीश धुर्वे तथा अन्य भाई-बहनें।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। विजयवाड़ा में ब्रह्माकुमारीज के द्वारा आयोजित 'माइंड स्पा' कार्यक्रम के पश्चात् उपस्थित एन.टी.आर. जिले के जिलाधिकारी डॉ. जी. लक्ष्मीशा दिनकर,20 सूत्री कार्यक्रम के अध्यक्ष, अमरावती बोटिंग क्लब के सीईओ एवं उद्योगपति तरुण काकानी राव, टी.टी. देवास्थानम बोर्ड के सदस्य जे. कृष्ण मूर्ति, ए.पी. चैंबर्स एफिलिएट्स के अध्यक्ष पोटलुरी भास्कर राव, एन.ए.पी. पी.एम.ए. के अध्यक्ष जी. जया कुमार, पी3 प्रदर्शनी आयोजक अनिल कुमार तथा अन्य।

परमात्मा के समान बनने के सात अभ्यास

संगमयुग पर आत्मा का सर्वोच्च लक्ष्य है- परमात्मा समान बनना। परन्तु यह केवल ज्ञान सुनने या याद करने से नहीं होता, बल्कि सात सूक्ष्म अभ्यास द्वारा आत्मा स्वयं को दैवी चेतना में स्थिर करती है। ये सात अभ्यास वही हैं, जो हमें मानव से देवता और साधक से विश्व कल्याणकारी बनाते हैं।

कुछ भी प्राप्त करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य का होना ही पर्याप्त नहीं होता बल्कि उसकी नींव का आधार सत्यता का होना भी आवश्यक है। साथ ही अभ्यास भी होना ज़रूरी है तभी हम न सिर्फ लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं बल्कि जीवन में संतोष और आनंद भी होता है। उसके लिए जानते हैं अभ्यास के कुछ टिप्सः-

1. आत्म स्मृति का अभ्यास -'मैं आत्मा हूँ'

हर परिवर्तन की जड़ में यही पहला अभ्यास है। जैसे ही आत्मा देह से अलग होकर अपने ज्योति-बिन्दु स्वरूप में टिकती है, वह तुरंत हल्कापन, पवित्रता और शान्ति का अनुभव करती है। बाबा कहते हैं-"बच्चे, शरीर से नहीं, आत्मा से सोचो, बोलो और कर्म करो।" सुबह अमृतवेला, भोजन के समय, चलते-फिरते हर क्षण यह स्मृति रखो कि "मैं ज्योति स्वरूप आत्मा, इस शरीर का चालक हूँ।" यह अभ्यास आत्मा को परमात्मा से जुड़ने के योग्य बनाता है।

2. परमात्म संयोग-"मेरा बाबा" की याद

परमात्मा समान बनने की शक्ति केवल योग की अग्नि में प्राप्त होती है। जब आत्मा प्रेम से बाबा को याद करती है तो वह उसकी शक्तियों का पात्र बन जाती है। यह स्मृति केवल ध्यान नहीं, बल्कि एक जीवंत सम्बन्ध है। बाबा कहते हैं-'बच्चे, जब तुम मुझे याद करते हो तो तुम्हारा हर संकल्प शक्ति की किरण बन जाता है।" निरंतर यह भाव रखो-"मेरा बाबा, मैं तेरा हूँ, और तू ही मेरी सर्वशक्ति का स्रोत है।"

3. पवित्र दृष्टि और वाणी का अभ्यास

परमात्मा की दृष्टि सदा कल्याणकारी होती है। समान बनने के लिए हमें भी प्रत्येक आत्मा में शिवबाबा की संतान ये देखना सीखना है। किसी के दोष पर दृष्टि न रखकर उसके गुण पर ध्यान देना, और हर शब्द में स्नेह, मर्यादा और शुभकामना रखना-यही दिव्य दृष्टिकोण है। "वाणी वह बनाओ, जिससे किसी की आत्मा ऊँची उड़ान भरे।"

4. निरहंकारी सेवा का अभ्यास

परमात्मा समान बनने का अर्थ है- सेवा में सदा दाता भाव रखना। सेवा करते समय यह भाव रहे-"मैं कुछ नहीं करता, बाबा कराते हैं।" जब अहंकार मिटता है तो सेवा में सफलता, नम्रता और आकर्षण बढ़ता है। बाबा कहते हैं-"सेवाधारी बनो, मालिक नहीं।" यह अभ्यास आत्मा को सदा हल्का और आनंदमय बनाए रखता है।

5. स्व-स्थिति की स्थिरता का अभ्यास

परमात्मा कभी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता, वह सदा स्थितप्रज्ञ रहता है। समान बनने के लिए हमें भी परिस्थितियों में अपने मन को स्थिर रखना है। " परिस्थितियाँ परीक्षा है, पर तुम्हारा मन शिक्षक के सामने स्थिर रहना चाहिए।" अमृतवेला के समय "स्थिर मन" का अभ्यास-"मैं शांत सागर की लहरों में विलीन हूँ।" यह अभ्यास आत्मा को अचल-अडोल बनाता है।

6. शुभ संकल्पों का अभ्यास

समान बनने का अर्थ है-हर विचार कल्याणकारी हो। जहाँ कोई क्रोध करे, वहाँ दुआ दो; जहाँ कोई नकारात्मक बोले, वहाँ स्नेह का शब्द दो। "संकल्प ही बीज है-जैसा बीज, वैसा फल।"
दैनिक अभ्यास करें-आज मैं केवल शुभ संकल्प ही बोऊँगा।" धीरे-धीरे ये संकल्प आपकी मनोशक्ति का भंडार बना देंगे।

7. निरंतर कृतज्ञता और आनंद का अभ्यास

परमात्मा समान आत्मा सदा आनंदित होती है, क्योंकि वह हर परिस्थिति को 'बाबा का वरदान" मानती है।
कृतज्ञता का भाव हृदय में रखने से मन सदा स्नेह और शक्ति से भरता है। "धन्य हूँ मैं, जो स्वयं परमपिता ने मुझे चुना है।"
हर दिन बाबा को धन्यवाद दें-"धन्यवाद बाबा, जो तूने मुझे यह दिव्य जीवन दिया।"
इन सात अभ्यासों द्वारा आत्मा धीरे-धीरे परमात्म समान बनने की स्थिति में पहुँचती है। यह कोई दूर का स्वप्न नहीं, बल्कि हर दिन का जीवन अभ्यास है। जब आत्मा इन गुणों में टिकती है- वह स्वयं "शान्ति, प्रेम और शक्ति" की जीवंत मूर्ति बन जाती है। "बाबा के बच्चे वही हैं जो बाबा जैसा बनते हैं।"

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी को मोमेंटो भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय व ब्र.कु. प्रकाश। साथ हैं शिक्षा मंत्री जी की धर्मपत्नी सोनिका शर्मा।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। डोंबिवली में आयोजित सम्मान समारोह में ब्र.कु. निकुंज को उनके गहन लेखन और प्रेरणादायक विचार नेतृत्व के लिए 'जन चेतना रत्न पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष रविन्द्र चव्हाण। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी।

नीमच-म.प्र.। नशामुक्ति, पर्यावरण व स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य करने वाले ज़मीनी कार्यकर्ताओं के लिए ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, राजयोगी ब्र.कु. सुरेन्द्र, ब्र.कु. राकेश, पुलिस महानिरीक्षक संदीप दत्ता, विधायक दिलीप सिंह परिहार, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती स्वाति चौपड़ा तथा अन्य सम्मानित कार्यकर्तागण।

बिलासपुर-सरकंडा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित तनावमुक्त जीवन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. रमा,तालापारा, राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर, ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,महाराष्ट्र, रिटायर्ड सिविल जज कनक प्रसाद, अखिल भारतीय सिंधी समाज के अध्यक्ष विनीता भावनानी तथा अन्य।

जगदलपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18वें स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजूषा, महापौर संजय पाण्डे, मेडिकल कॉलेज के डॉ. के.एल. आज़ाद, रोटरी क्लब अध्यक्ष राहुल जैन, इनरव्हील क्लब अध्यक्ष लाइबा चार्मड़िया, सचिव प्रीति आज़ाद एवं रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष विवेक सोनी।

खरोरा-छ.ग.। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय कृषि अनुप जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. पंकज शर्मा को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए ब्र.कु. उमा।

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के सद्भावना भवन में 'वर्क-लाइफ बैलेंस थ्रू स्पिरिचुअलिटी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रुक्मणि दीदी, ब्र.कु. बिंदु, अभियंतागण तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। भारतीय नौसेना स्टाफ के प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। साथ है कर्नल अविनाश रावल, ब्र.कु. प्रकाश तथा अन्य।

बिजावर-म.प्र.। विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य में विशाल रक्तदान अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में मनीष शर्मा विकासखंड समन्वयक मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, छोटू प्रजापति प्रशिक्षक मूर्ति निर्माण, कृष्णा रिछारिया डायरेक्टर टारगेट कंप्यूटर कॉलेज, शीला दीक्षित,परामर्शदाता, राहुल दुबे,परामर्शदाता जन अभियान परिषद, विमल खरे,पत्रकार, दीपक सोनी नवांकुर संस्था जन अभियान परिषद, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।
तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर हम आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

माउंट आबू-राज.। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मुख्यालय पाण्डव भवन में ब्रह्मा बाबा के शान्ति स्तम्भ पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् समूह चित्र में परिवार सहित त्रिपुरा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सुब्यसाची दत्ता पुरकायस्थ एवं राजयोगी ब्र.कु. शशिकान्त,माउंट आबू।

बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। रक्षाबंधन के अवसर पर कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विभु बाखरू को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरोजा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. बिंदु तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

बैतूल-म.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. पूर्णिमा व ब्र.कु. स्मृति।

केशोद-भंडुरी(गुज.)। रक्षाबंधन पर्व पर मेडिकल ऑफिसर श्रीमती भरडा जी व अन्य स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. दक्षा।

स्व ऑडिट : 2025 का लेखा जोखा

-ब्र.कु. आकाश

आगामी वर्ष में नयी उड़ान के संकल्प

एक वह आत्मा जिसने परमपिता शिव बाबा(शिव परमात्मा) के स्नेह शक्ति और श्रीमत के अनुसार अपना जीवन दिव्य बनाने का संकल्प लिया है। 2025 मेरे लिए आत्म परिवर्तन और ईश्वर के निकटता का एक विशेष वर्ष रहा। इस वर्ष में मैंने अनेक संकल्प किए थे- अपने स्वभाव में दिव्य गुणों का विकास करना, संस्कारों में श्रेष्ठता लाना, सम्बन्धों में मधुरता स्थापित करना, बुरी आदतों से मुक्त रहना और निगेटिविटी या व्यर्थ इन संकल्पों को समाप्त करना।

आज मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो अनुभव होता है कि बाबा की कृपा और निरन्तर अभ्यास से बहुत कुछ बदला है। क्रोध की जगह शान्ति ने ली, असहिष्णुता की जगह सहनशीलता आई और सम्बन्धों में पहले से अधिक प्रेम, समझ और सहयोग की भावना विकसित हुई। अनेक बार परिस्थितियां आईं, पर हर बार "मैं परमात्मा का बच्चा हूँ, शक्तिशाली हूँ, ड्रामा में मेरा विशेष पार्ट है" की स्मृति ने मुझे शान्त व स्थिर रखा। यह 2025 का आत्म लेखा-जोखा मेरे लिए एक प्रेरणा है कि परिवर्तन की दिशा सही है, बस निरन्तरता बनाए रखना। फिर भी, कुछ और गहराई की आवश्यकता है- जैसे कि मन की पूर्ण शुद्धता, संगम के समय का सही उपयोग, और हर कार्य में परमात्मा की याद की निरन्तरता। कभी-कभी सेवा में व्यस्तता के बीच बाबा की उपस्थिति को भूल जाता हूँ, यह वह क्षेत्र है जहाँ 2026 में मुझे बहुत सजग रहना है।

उसके लिए नये दिव्य संकल्प के साथ-साथ नया उमंग-उत्साह और तीव्र गति से जो बाबा ने मुझ पर आस रखी है और मेरा निजी लक्ष्य भी है कि परमात्मा के सानिध्य में और निकट होकर सर्वशक्तियाँ और सर्व दिव्यगुणों से सम्पन्न कर लूँ। उसके लिए 6 संकल्प दिल से करता हूँ कि-

1. सदा स्मृति रहे- हर क्षण यह अनुभव रहे कि मैं शान्ति, प्रेम और पवित्रता का फरिश्ता हूँ।

2. सम्बन्धों में श्रेष्ठता- प्रत्येक आत्मा को बाबा का बच्चा समझकर उसके साथ दिव्य दृष्टि और करुणा से व्यवहार करूं।

3. सेवा में नयापन- अपने विचारों, वाणी और कर्म से लौकिक और अलौकिक सेवा में नयापन और शक्ति लाऊं।

4. समय की पवित्रता- हर क्षण, हर पल को बाबा की याद में भरकर जीवन को श्रेष्ठ स्वर्णिम बनाऊं।

5. संयम और सादगी- खान-पान, बोल-चाल और बाबा की बनाई हुई दिनचर्या में मर्यादाएं पालन करूं ताकि आत्म-बल निरन्तर बढ़े।

6. बाबा की अपेक्षाओं पर खरा उतरना- परमात्मा जो चाहता है कि उसका हर बच्चा विश्व का प्रकाश स्तम्भ बने, लाइट हाउस बने, 'मैं उस कार्य का पात्र बनूं।'

2025 की यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि आत्मा की वास्तविक प्रगति केवल अभ्यास, निष्ठा और बाबा की याद से सम्भव है।

अब 2026 में मेरा लक्ष्य है कि मैं अपनी हर श्वास, हर संकल्प और हर विचार को 'बाबा के संग रखूं'। जब मैं स्वयं सम्पूर्णता की ओर बढ़ूंगा तो मेरे वायब्रेशन्स से विश्व में शान्ति, प्रेम और एकता का प्रसार होगा। यही मेरा नववर्ष में संकल्प है- "स्वयं को दिव्य बनाना और परमात्मा की आशाओं को पूर्ण करना।"

नौगांव-म.प्र.। नौगांव के जवाहर नवोदय विद्यालय के अटल सभागार में 'किताबी ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान का होना भी जरूरी है' विषय पर आयोजित कार्यक्रम पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नंदा बहन, ब्र.कु. रवि शंकर राय, प्रधानाचार्य नत्थ प्रसाद चंचल तथा अन्य विद्यालय के स्टाफ एवं विद्यार्थिगण।

रायपुर-छ.ग.। 79वें स्वतन्त्रता दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में आयोजित कार्यक्रम में ध्वजारोहण करते हुए इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. सविता,रायपुर तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

परोली-गुज.। मृत्यु पश्चात् शोक सभा में शांति पाठ के पहले दीपक जलाकर सद्गत आत्मा के लिए शांति प्रार्थना करने के पश्चात् सभी आगंतुक भाई-बहनों को आत्मिक पाठ पर अवगत कराते हुए ब्र.कु. मुकेश बहन। कार्यक्रम में परिवार के सदस्य भरत पटेल,गायत्री परिवार प्रतिनिधि, श्रीमती दीपिका पटेल,गायत्री भजन मंडल प्रमुख तथा अन्य।

उदवाड़ा-गुज.। रक्षाबंधन के अवसर पर शांताबा इंग्लिश मीडियम स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मीनल, ब्र.कु. मित्तल, शांताबा इंग्लिश मीडियम स्कूल के ट्रस्टी किशोर गांधी, प्रिंसिपल आकांक्षा जी तथा अन्य स्टाफ एवं विद्यार्थिगण।

अव्यक्त मुरली 13-02-2003 (पहेली-02)2025-26

ऊपर से नीचे

1. आपका मध्य का स्वरूप पूज्य चित्र हैं तो मध्य ..... में भी पूज्य रूप में आप वरदान देने वाले, दुआयें देने वाले, आशीर्वाद देने वाले दाता रूप हो।(3)
2. हर एक को यह ..... है कि चारों ओर की सेवा से अभी उल्हनें को पूरा जरूर करना है।(2)
3. पुण्य का खाता एक का 10 गुणा फल देता है। तो सारे ..... में नोट करो-संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य का खाता कितना जमा किया? (2)
4. माया देखती है कि ..... आत्मा अलबेली हो गई है तो माया आर्डर करने लगती है। कभी संकल्प शक्ति, कभी मुख की शक्ति माया के आर्डर में चल पड़ती है।(6)
6. जिस शक्ति की जिस समय आवश्यकता है उस समय जी हाजिर हो जायेगी। ऐसे नहीं ..... पूरा हो जाए और आप आर्डर करो सहनशक्ति आओ।(2)
9. सभी अपने-अपने तरफ से सेवा का प्लैन प्रैक्टिकल में ला रहे हैं। इसके लिए बापदादा ..... से मुबारक दे रहे हैं। (2)
11. आपका आदि स्वरूप ..... रूप, उसका अर्थ ही है ..... अर्थात् देने वाला।(3)
12. संस्कार परिवर्तन से ..... परिवर्तन होगा।(3)
14. आत्माओं को सन्देश द्वारा अंचली देते रहेंगे तो .....स्वरूप में स्थित रहेंगे, तो दातापन के पुण्य का फल शक्ति मिलती रहेगी।(2)
16. सीट पर .....जो है वह स्वप्न में भी अपसेट नहीं हो सकता।(2)
17. लास्ट में आपके एक ..... की दृष्टि कमाल करेगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।(3)
19. ब्राह्मण आत्मायें वर्तमान वायुमण्डल को देख विदेश में ..... तो नहीं हैं?(3)
20. अगर ब्राह्मण दृढ़ ..... करें तो क्या नहीं हो सकता! सब हो जायेगा सिर्फ योग को ज्वाला रूप बनाओ।(3)
22. आत्मा करावनहार स्वरूप की स्मृति रहे तो सर्व कर्मेन्द्रियां आर्डर में रहेंगी। ..... के आर्डर में नहीं रहेंगी, आपके आर्डर में रहेंगी।(2)

बायें से दायें

1. जो सदा दाता बनता है, उस पुण्य का फल समय पर सहयोग, समय पर ..... उस आत्मा को सहज प्राप्त होता है। (4)
3. वाणी द्वारा किसी कमजोर आत्मा को खुशी में लाना, परेशान को शान स्मृति में लाना, ... आत्मा को अपनी वाणी द्वारा उमंग-उत्साह में लाना, सम्बन्ध -सम्पर्क से आत्मा को अपने श्रेष्ठ संग का रंग अनुभव कराना, इस विधि से पुण्य का खाता जमा कर सकते हो।(5)
5. विश्व में अनेक प्रकार की आत्मायें हैं, किन आत्माओं को ..... अमृत चाहिए, अन्य आत्माओं को शक्ति चाहिए, गुण चाहिए, आप बच्चों के पास सर्व खण्ड खजाने हैं। हर एक आत्मा की कामना पूर्ण करने वाले हो।(2)
7. जिस सेन्टर पर कोई ..... नहीं हो सिर्फ मातायें हों तो अच्छा लगेगा! और सिर्फ ..... हों, शक्तियां नहीं हो, तो भी सेवाकेन्द्र का श्रृंगार नहीं लगता हैं।(3)
8. वर्तमान समय अपना ..... और दाता स्वरूप प्रत्यक्ष करो"(5)
10. कहो इतना ..... है जो दिल कहता है कि अगर हैं तो हम डबल विदेशी हैं। डबल ..... है, स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी।(2)
13. आज ..... बाप अपने ज्ञान दाता, शक्ति दाता, गुण दाता, परमात्म सन्देश वाहक बच्चों को देख रहे हैं।(4)
15. पुण्य का खाता जमा कर रहे हैं लेकिन पिछले जो कुछ संस्कार का बोझ है, वह भस्म योग ज्वाला से होगा। ..... योग से नहीं।(4)
16. बापदादा अभी सेवा का प्रत्यक्ष संगठित रूप देखने चाहते हैं। मेहनत अच्छी कर रहे हो, हर एक अपने वर्ग की, एरिया की, ज़ोन की, ... की कर रहे हो, बापदादा खुश होते हैं।(3)
18. अभी से राज्य अधिकारी बनने के संस्कार भरेंगे तब ही वहाँ भी राज्य चलायेंगे। स्वराज्य अधिकारी की ..... से कभी भी नीचे नहीं आओ। अगर कर्मेंद्रियां आर्डर पर रहेंगी तो हर शक्ति भी आपके आर्डर में रहेगी।(2)
21. ब्राह्मण आत्मायें परमात्म छत्रछाया के अन्दर सदा प्रूफ हैं। बेफिकर बादशाह हो ना! कि थोड़ा-थोड़ा ..... है, क्या होगा?(3)
22. सर्व शक्तियां आपके आर्डर पर रहेंगी, सर्व कर्मेन्द्रियां आपके आर्डर पर रहेंगी, इसको कहा जाता है स्वराज्य अधिकारी, ... सर्वशक्तिवान।(3)
23. जितनी ..... में हलचल होगी उतनी ही आप ब्राह्मणों की स्टेज अचल होगी।(3)

01/24- पहेली का उत्तर (अव्यक्त मुरली 18-01-2003)

ऊपर से नीचे: 1.दिलखुश, 2.सहज, 3.समान, 5.मधुबन, 6.रहम, 9.वरदान, 10.अशरीरी, 11.उपराम, 13.विशेषता, 17.शान्ति, 18.समय, 19.शिव, 21.खुश।

बायें से दायें: 1.दिवस, 4.कमजोर, 7.हनुमान, 8.जीवन, 10.अन्त, 12.रवि, 14.बापदादा, 15.शरीर, 16.नशा, 18.समर्थ, 20.प्रेम, 22.वर्से, 23.यज्ञ, 24.शक्तिशाली।

राजयोग की शिक्षा, घर-घर को पवित्र आश्रम जैसा स्वर्ग बनाने का बल देती

विसनगर-रालीसणा(गुज.)। पवित्र जीवन यात्रा महोत्सव-2025 के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ मेहसाणा सबज़ोन द्वारा 'ऐन्जल पार्क' में अपना जीवन पवित्र बनाकर पूरी धारणाओं के साथ चलने वाले उपस्थित 1500 स्वर्ण ताजधारी माताएं, अधर कुमार एवं कुमार-कुमारियों के लिए आयोजित सम्मान समारोह में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी,माउंट आबू ने कहा कि भगवान को ऐसे पवित्र व योगी बच्चे चाहिए जो भगवान को विश्व परिवर्तन में साथ दें। राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि पूरे उत्तर गुजरात से माताएं, अधरकुमार, कुमार-कुमारियां ऐसे विशिष्ठ रत्न हैं जिन्होंने कीचड़ में रहते हुए अपने जीवन को कमल पुष्प समान पवित्र बनाया है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए, अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए यह सिद्ध कर बताया है कि घर में रहते हुए व्यवहार एवं परामर्श का बैलेंस रख सकते हैं। विसनगर के हनुमान मंदिर के महंत राजाराम‌गिरीजी एवं विसनगर एपीएमसी के चेयरमैन प्रीतेश भाई पटेल ने भी इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। ब्र.कु. तृप्ति ने भी अपने प्रेरणादायी विचार रखे व मेहसाणा की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कुसुम ने सभी का दिल से स्वागत व अभिनंदन किया।

माताओं के लिए आयोजित वक्तृत्व स्पर्धा

1.ब्राह्मण जीवन में पवित्रता का महत्व
2.घर बने मंदिर
3.नारी तू नारायणी
4.गरबा स्पर्धा

अधर कुमारों के लिए क्विज़, कुमार-कुमारियों के लिए शीघ्र वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन भी किया गया। जिसमें सभी ने बहुत ही उमंग-उत्साह से भाग लिया। हर स्पर्धा के प्रथम तीन विजेताओं को मोमेन्टो भेंट कर पुरस्कृत किया गया एवं सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित इनाम भी दिया गया।

किसानों को जैविक और प्राकृतिक खेती की दिशा में जाना चाहिएः नेताम

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ दिव्य धाम सिविल लाइंस धमतरी में हरदिया समाज के भवन में आयोजित 'भारतीय कृषि दर्शन एवं सम्पूर्ण ग्राम विकास' कार्यक्रम में कृषि मंत्री रामविचार नेताम ने कहा कि किसानों को जैविक और प्राकृतिक खेती की दिशा में आगे आना चाहिए। ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा इस दिशा में जो अभियान चलाया जा रहा है वह निश्चित रूप से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक प्रभावी प्रयास है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजु,माउंट आबू ने कहा कि शाश्वत यौगिक खेती मिट्टी, जल और जैव विविधता के संरक्षण से कंपोस्ट खाद बनता है, रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होती है जिससे किसानों की लागत में कमी आएगी और उनकी आय में वृद्धि होगी। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ग्राम एवं कृषि विकास प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. सुमंत,माउंट आबू ने आध्यात्मिक खेती के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने कहा कि आज का विशाल सम्मेलन किसानों को न केवल शाश्वत यौगिक खेती के लिए ही प्रोत्साहन देगा अपितु आध्यात्मिक शाश्वत यौगिक खेती के माध्यम से किसान अपने जीवन को उज्जवल और धन्य बना सकेंगे। महापौर जगदीश रामू रोहरा, विधायक ओमकार साहू, पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष नेहरू निषाद, भाजपा अध्यक्ष बी.जी. एवं जिला पंचायत अध्यक्ष अरुणसावों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में हज़ारों किसान भाई-बहन उपस्थित रहे व मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. प्राजक्ता ने किया।

नैतिक और चारित्रिक पतन का मूल कारण- नशा

चुनार-मीरजापुर(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भारत सरकार के नारकोटिक्स कन्ट्रोल ब्यूरो के साथ हुए आपसी समझौते के अनुसार देशव्यापी रूप में चलाए जा रहे नशा मुक्ति अभियान के तहत कैलहट,चुनार में 90 दिवसीय अभियान का भव्य आगाज़ हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल की अध्यक्षा एवं पूर्वी उत्तरप्रदेश की सह-निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. परिणीता दीदी ने कहा कि नशा जी ने कहा कि नशा व्यक्ति की मानसिकता को भी विकृत कर देता है जिससे समाज में अपराध बढ़ते हैं। अतः हम सभी को मिलकर समाज को इससे मुक्त करना होगा। राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के उपाध्यक्ष सोहनलाल श्रीमाली ने नशे को मानसिक पिछड़ापन बताते हुए कहा कि स्वयं को इससे निकालकर समाज के अन्य व्यक्तियों को भी निकालना है। सहकारी यूनियन उत्तरप्रदेश के सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. बीनू ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में ब्र.कु. तारा ने आये हुए सभी अतिथियों को नशा मुक्ति की प्रतिज्ञा कराई एवं मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. तापोशी ने किया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रबन्धक राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र, राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय,अयोध्या के पूर्व कुलपति प्रो. रविशंकर सिंह, जननायक चंद्रशेखर

एक सामाजिक अभिशाप है जिससे परिवार में बिखराव और सम्बन्धों में कटुता आने लगती है। हमें इस अभिशाप और अपराध वृत्ति से मुक्त होने के लिए राजयोग जीवनशैली को अपनाना होगा। श्रीनारायण स्वामी जी महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा बनकर सामाजिक परिवर्तन के लिए आगे आना होगा। आर.एस.एस. काशी प्रांत के प्रांत प्रचारक रमेश निदेशक राम प्रकाश दुबे ने ऐसे सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नयन के कार्य में संस्था के साथ मिलकर कार्य करने की ज़रूरत पर बल दिया। कॉर्पोरेट ट्रेनर, काउंसलर एवं हिप्नोथेरेपिस्ट ब्र.कु. डॉ. सचिन परब ने कहा कि नशे के आदी व्यक्ति को आध्यात्मिक और भावनात्मक हीलिंग प्रदान कर, आंतरिक चेतना के विकास द्वारा जीवन की नई राह प्रदान किया जा सकता है। स्थानीय विश्वविद्यालय,बलिया के पूर्व कुलपति प्रो. कल्पलता पाण्डेय, प्रो. सुनीता त्रिपाठी, चुनार आर.एस.एस. के पूर्व प्रचारक सुरेन्द्र सिंह पटेल आदि ने भी अपने विचार रखे। सभी अतिथियों ने रैली को हरी झण्डी व शिवध्वजा दिखाकर रवाना किया। अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी एशियन गोल्ड मेडलिस्ट हांगकांग,नेशनल चैंपियन, वर्ल्ड रैंक होल्डर ब्र.कु. वीरेन्द्र सिंह मकराम ने रैली का नेतृत्व किया।

शिवरीनारायण बिलासपुर विराट संत सम्मेलन

बिलासपुर-शिवरीनारायण(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के धार्मिक प्रभाग द्वारा मेला ग्राउंड के पास सतसंग भवन में आयोजित 'गीता ज्ञान द्वारा सनातन संस्कृति की पुनः स्थापना' कार्यक्रम में आचार्य महामंडलेश्वर कमल किशोर,सहारनपुर ने बताया जब मैं ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम गया तो पता चला यह तो शिव को मानती हैं। इनका मूल उद्देश्य है- नर ऐसी करनी करे जो नारायण बन जाए, नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी बन जाए। संत गोपाल दास ने बताया कि धन से ज़्यादा आवश्यक है परमात्मा की धुन में खो जाना। जिसके पास धन है वहाँ विपत्ति रहती है। परमात्मा का नाम रूपी धन सदा आपके साथ है तो सदा आप सुरक्षित रहेंगे। धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण,इंदौर ने कहा कि जब आत्मा में सत्वगुण राजयोग के माध्यम से जागृत हो जाते हैं तो ही सत्य, सनातन धर्म की स्थापना प्रारम्भ होती है। हमारे संस्कार परिवर्तन होकर संसार परिवर्तित हो जाता है। विधायिका श्रीमती शेषराज हरबंस,पामगढ़ ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि ऐसा आयोजन करना अर्थात् धर्म के प्रति लोगों को जागृत करना है। महंत ओमप्रकाश ने कहा कि ऐसे संतों का आगमन हमारे शिवरीनारायण तीर्थ स्थान के लिए गौरव का विषय है और ब्रह्माकुमारीज़ सनातन धर्म की पुनः स्थापना में योगदान के लिए सराहना की। संत हौसला प्रसाद ने कहा कि बिना धर्म से जुड़े सुख-शान्ति का वास जीवन में नहीं हो सकता। स्वामी दिनेश प्रसाद गोस्वामी ने बताया कि धर्म उम्मीद जगाता है। स्वामी सुरेन्द्र ने कहा कि ऐसी बाल ब्रह्मचारी बहनें इस पुनीत कार्य में लग जाएंगी तो भारत फिर से विश्वगुरू बन जाएगा।

विश्व में एकता और विश्वास के लिए ज़रूरी राजयोग ध्यान

फरीदाबाद-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के वरदानी भवन सेक्टर 21 डी में आध्यात्मिक सम्मेलन के अंतर्गत आयोजित 'विश्व, एकता और विश्वास के लिए ध्यान' विषयक कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने कहा कि आज समाज में एकता और विश्वास की कमी के कारण मनुष्य भयभीत जीवन जी रहा है। जैसे अर्जुन की व्यथा के समय श्रीकृष्ण ने उन्हें ध्यान का अभ्यास करना सिखाया, वैसे ही आज प्रत्येक मनुष्य को ध्यान का अभ्यास करना चाहिए। हरियाणा के कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें निःस्वार्थ भाव से विश्व के नवनिर्माण में लगी हैं। राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा एवं मुख्यमंत्री सलाहकार राजीव

जेटली ने कहा कि मेडिटेशन से समाज में 30 परसेन्ट तक अपराध घट सकता है। एम.सी.एफ. के एडिशनल कमिश्नर गौरव अंटिल ने कहा कि नकारात्मक वातावरण में परमात्म स्मृति ही हमें सुरक्षित रख सकती है। श्री जगदगुरु विजय रामदेवाचार्य भैया जी महाराज ने कहा कि यदि सांसों के साथ हम परमात्मा को स्मरण करें और अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त करें, तभी ईश्वर का सानिध्य संभव है। कार्यक्रम में लायंस क्लब के प्रेसिडेंट आर.पी. हंस ने ऊषा दीदी को शॉल ओढ़ाकर व मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। इंटरनेशनल सिंगर जय गोपाल लुथरा ने परमात्मा से जुड़ी मधुर प्रस्तुतियां देकर वातावरण को आध्यात्मिकता से भर दिया। नमन प्रीत कौर ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. हरीश दीदी ने शुभकामनाएं दी, ब्र.कु. प्रीति ने स्वागत तथा अतिथियों का सम्मान किया। अंत में स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी,एनआईटी फरीदाबाद ने सभी अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन ब्र.कु. ईशु बहन ने किया।

वैश्विक शिखर सम्मेलन में देश-विदेश से पहुंची नामी-ग्रामी हस्तियाँ

भारत में जो आध्यात्मिक शक्ति है वो विश्व में कहीं और नहीं: रेलमंत्री

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शान्तिवन में शुक्रवार से वैश्विक शिखर सम्मेलन में भारत सहित चीन, जर्मनी, नेपाल, थाईलैंड, मलेशिया के अपने-अपने क्षेत्र के विद्वानों ने भाग लिया। एकता विश्वास-आदर्श भविष्य के लिए प्रेरणा विषय पर आयोजित कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए भारत सरकार के केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी व रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि मुझे माउंट आबू आने का बहुत मन था, लेकिन किसी कारणवश पहुंच नहीं पाया। मैं राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। विश्व में बड़ा बदलाव है कि आज परहित की भावना टूट चुकी है। सब स्वार्थ से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत में आध्यात्मिक शक्ति है जो विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलती है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि हमारे मन में एक मिनट में कितने तरह के विचार आते हैं उसमें बहुत से नकारात्मक विचार भी होते हैं। यहाँ हम सभी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा, दैवी गुणों की धारणा और सेवा भाव सीखते हैं। विश्व की सभी-आत्माओं के रचयिता एक परमपिता शिव परमात्मा हैं। सभी आत्माओं के मूल गुण- शान्ति, प्रेम, पवित्रता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि संकल्प बीज है। हमारे संकल्प जितने शक्तिशाली, शुद्ध, सात्विक, पवित्र और सकारात्मक होते हैं, आत्मा उतनी ही शक्तिशाली बनती है। और साथ ही उन्होंने विश्वभर से आये प्रतिनिधियों को राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से गहन शान्ति की अनुभूति कराई। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण के लिए अनेक योजनाएं चला रही है। सांसद बीवाई राघवेन्द्र,शिमोगा,कर्नाटक ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा करना हम सभी का दायित्व है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से लोगों का जीवन शान्तिमय बना रही है। कर्नाटक सरकार के आबकारी मंत्री आरबी तिम्मापुर ने कहा कि आज समाज को आध्यात्मिक ज्ञान और मेडिटेशन की बहुत आवश्यकता है।

ब्रह्माकुमारीज़ चरित्र निर्माण का काम कर रही है

आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में चरित्र निर्माण पर ध्यान व ज़ोर दिया जाता है और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान चरित्र निर्माण का काम कर रहा है। इस ग्लोबल समिट से एक मिशन लेकर जायेंगे तो नए भारत का उदय दिखाई देगा।

इंडिया वन सोलार थर्मल पॉवर प्लांट बना मिसाल

पर्यावरणविद् एवं ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. गोलो जे. पिल्ज,जर्मनी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा देश-विदेश पर्यावरण के क्षेत्र में जन जागरूकता लाने के लिए अनेक अभियान चलाया गया। मृदा संरक्षण और प्राकृतिक खेती का बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार और जर्मन सरकार के सहयोग से इंडिया वन सोलार थर्मल पॉवर प्लांट स्थापित किया गया है, जो नवीनीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में मिसाल बना हुआ है।

इन्होंने भी किया सम्बोधित

- वरिष्ठ सम्पादक एवं एंकर मीनाक्षी जोशी ने कहा कि एकता और विश्वास यह दो शब्द ही समाज के कल्याण की धुरी हैं। एकता का एक ही सूत्र है अध्यात्म। जब हम स्वयं को ईश्वर के साथ जोड़ेंगे तो स्वयं के साथ अनेकों में एकता और विश्वास ला सकते हैं।
- नेपाल के गायक आनंद कार्की ने कहा कि मेडिटेशन का कमाल है कि मेरे दिमाग में सदा सकारात्मक सोच ही रहती है।
- ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अतिरिक्त महासचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि परमात्मा शिवबाबा के आशीर्वाद से आज ये सुंदर आयोजन हो रहा है। इसमें देश-विदेश से आये सभी महानुभावों का मैं भगवान के घर में हृदय से अभिनंदन करता हूं। यहाँ से आप सभी को जीवन में नई दिशा और प्रेरणा मिले, यही शुभभावना है।
- वरिष्ठ पत्रकार दीप्ति कोठारी,जयपुर, राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी और ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इन्हें किया गया पुरस्कृत

- समाचार पत्र के माध्यम से जन सरोकारी पत्रकारिता, सामाजिक जागरुकता, जन सरोकारी मुद्दों के माध्यम से जन-जन की आवाज़ बनने पर राजस्थान पत्रिका समूह के सम्पादक गुलाब कोठारी को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान गुलाब कोठारी के प्रतिनिधि के रूप में राजस्थान पत्रिका समूह की निदेशक दीप्ति कोठारी ने ग्रहण किया।
- मध्यप्रदेश के सागर के प्राकृतिक खेती प्रशिक्षक एवं सामाजिक सुधारक आकाश चौरसिया को उनके द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए गार्डियन ऑफ हयूमैनिटी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। साथ ही केरल के महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी के फैकल्टी केवी दयाल को ऑर्गेनिक फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए गार्डियन ऑफ हयूमैनिटी अवॉर्ड से नवाजा गया।
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से समाज में योग के प्रति जनजागरुकता बढ़ाने में सराहनीय योगदान पर इंडिया टीवी की वरिष्ठ सम्पादक एवं एंकर मीनाक्षी जोशी को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से नवाजा गया।

बिना विवेक के न्याय केवल एक मशीन की तरह है- जस्टिस पुष्करना

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में आयोजित तीन दिवसीय सम्मेलन में दिल्ली उच्च न्यायालय की न्यायाधीश मिनी पुष्करना ने कहा कि विज़डम का अर्थ सबके प्रति प्यार और करुणा का भाव है। न्याय बिना विवेक के एक मशीन की तरह है और विज़डम बिना न्याय के दिशा रहित है। न्याय हमें आश्वस्त करता है। न्याय के लिए कानून ही नहीं बल्कि प्यार और करुणा भी ज़रूरी है। न्याय का अर्थ पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखना है। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि हमारी संस्कृति में विज़डम का स्थान सर्वोपरि रहा है। भारत आध्यात्मिकता में विश्व गुरु है। आंध्र प्रदेश,उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश वी. ईश्वरैया ने कहा कि न्याय का अर्थ सच्चाई और विश्वास है। उन्होंने आगे कहा कि वो काफी समय से राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं। योग से उनके अंदर एक अद्भुत परिवर्तन हुआ। जिस कारण जो भी निर्णय लिए उनमें पारदर्शिता और संतुष्टता का अनुभव किया। प्रभाग अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी ने कहा कि न्याय में सत्यता के गुण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। विवेकपूर्ण निर्णय तभी संभव है जब हम आध्यात्मिक रूप से सशक्त हों। आध्यात्मिकता हमें आंतरिक रूप से मजबूत करती है। जब हम अंतरात्मा की आवाज़ पर निर्णय लेते हैं, तभी भयमुक्त होते हैं। मध्यप्रदेश,उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं संस्थान के न्यायिक प्रभाग के उपाध्यक्ष माननीय बी.डी. राठी ने कहा कि न्यायिक क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है। प्रयागराज,उच्च न्यायालय के पूर्व जस्टिस ए.आर. मसूदी ने कहा कि न्याय के तराजू का संतुलन ज़रूरी है। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान जाति धर्म से ऊपर उठकर मानवता के लिए कार्य कर रहा है। जीवन को सुख-शान्ति सम्पन्न बनाने के लिए राजयोग ज़रूरी है। केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण के न्यायिक सदस्य राजवीर सिंह वर्मा ने कहा कि आज तथ्य का न्याय होता है, सत्य का नहीं। इसलिए न्याय के साथ आध्यात्मिक गुणों का समावेश ज़रूरी है। इस अवसर पर न्यायविद प्रभाग द्वारा वैल्यूज़ बेस्ड जस्टिसः द सोल ऑफ लॉ अभियान का भी शुभारम्भ किया गया। ये अभियान राष्ट्रीय स्तर पर 15 मार्च 2026 तक चलेगा। जिसके अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम किए जाएंगे। न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े लोगों को आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति जागृत किया जाएगा। ओआरसी के वित्त विभाग के प्रबंधक ब्र.कु. राजेन्द्र ने कार्यक्रम के अंत में सबका आभार व्यक्त किया। न्यायविद प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. नथमल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. लता अग्रवाल,माउंट आबू ने राजयोग के अभ्यास से शान्ति की अनुभूति कराई। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. श्रद्धा एवं ब्र.कु. येशु ने किया। कार्यक्रम में न्यायिक क्षेत्र से जुड़े 450 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की और कार्यक्रम का लाभ लिया।

- न्यायविदों के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अभियान का शुभारम्भ
- न्यायविद प्रभाग द्वारा वैल्यूज़ बेस्ड जस्टिसः द सोल ऑफ लॉ अभियान
- ये अभियान राष्ट्रीय स्तर पर 15 मार्च 2026 तक चलेगा

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month.
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नामिमकनी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शान्तिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org